UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182254
UNIVERSAL
LIBRARY

सन्त दादू और उनकी वाणी

सम्पादक

"अज्ञात सन्त"

सर्वोदय साहित्य मन्दिर.
हुसैनी अलम रोड, हैदराबाद (द.) नं. २

प्रकाशक

राजेन्द्र कुमार एंड ब्रदर्स

बलिया

प्रथमबार : ११०० प्रतियाँ

मूल्य २॥)

सर्वाधिकार संपादक द्वारा सुरक्षित

मुद्रकः—
हिमालय प्रेस
तेलियाबाग बनारस कैंट

दो शब्द

सन् १९४५ ई० के नवम्बर मास में रविवार के दिन मैं अपने कार्यालय में बैठा था। लगभग १२॥ बजे मेरे मित्र एक साधु के साथ आये। मैंने बड़ी श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया और आदर के साथ बैठाया।

साधु बाबा गेरुआ वस्त्र धारण किये थे। बाघम्बर बगल में दबाये थे, हाथ में एक बड़ा झोला था। भोजनोपरान्त मेरे मित्र ने कहा :—स्वामीजी ने मीरांबाई तथा सन्त दादू के भजनों का बहुत बड़ा संग्रह तैयार किया है। वे इन दोनों संग्रहों को प्रकाशित कराना चाहते हैं। मैंने पूछा:—किन शर्तों पर ?

स्वामीजी ने कहा—भक्त, मैंने बड़े परिश्रम से इन संग्रहों को तैयार किया है,इन्हें छापने के लिए हमने कई धनीमानी सज्जनों से याचना की,मगर सारा प्रयत्न निष्फल रहा। अब तो मेरी आन्तरिक इच्छा है कि तुम्हीं इन्हें छापो और इन भजनों का प्रचार करो। भगवान तुम्हारा भला करेगा, हम भी तुम्हें आशीर्वाद देंगे।

मैंने पांडुलिपि प्रकाशनार्थ रख ली और स्वामीजी को विश्वास दिलाया कि इन्हें शीघ्र छाप कर प्रकाशित कर दूँगा। स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए और रात की गाड़ी से अयोध्या चले गये

जनवरी सन् १९४६ में मैंने इन संग्रहों को विशेष रूप से

प्रकाशित प्रतियों से मिलाया। हमें इनमें कोई पांडित्य या नवीनता नहीं मालूम पड़ी और हमने इन दोनो को बांधकर विशेष यत्न से रख दिया, कि कभी स्वामीजी को वापस कर दूँगा।

सन् १९५० में मुझे स्वामीजी की अचानक याद आयी और उनके ये शब्द कानों में गूंज उठे:—"भक्त इन्हें शीघ्र छाप कर प्रचारित करना, भगवान तेरा भला करेगा।'

मैंने पांडुलिपि पुनः देखा और उन्हें ज्यों-का-त्यों छापने को दे दिया। इसमें हमने पद्य भाग में कोई परिवर्तन नहीं किया। हाँ, प्रारम्भ में जीवनी तथा विषय-सूची जोड़ दिया है। आशा है, पाठक इसे पसन्द करेंगे, और स्वामीजी को दिया बचन पूरा हो जायेगा।

प्रकाशक—

सन्त दादू और उनकी वाणी

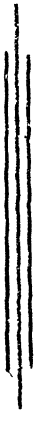

प्रथम खण्ड

जीवन चरित्र

हमारे प्रकाशन

उपन्यास

१—श्रीकान्त	शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय	५॥)
२—चरित्रहीन	,, ,,	५)
३—पथ के दावेदार	,, ,,	४)
४—शेष प्रश्न	,, ,,	४)
५—सविता	,, ,,	४)
६—लेन-देन	,, ,,	३)

नाटक

७—नूरजहाँ	द्विजेन्द्रलाल राय	१।।।)
८—शाहजहाँ	,, ,,	१ ॥)
९—चन्द्रगुप्त	,, ,,	१।।।)

धार्मिक

१०—सन्तवाणी	संग्रह	१)
११—मीराँ की पदावली	"अज्ञात संत"	३)
१२—सन्त दादू और उनकी वाणी	,,	३)

विविध

१३—समाज सेवा	महात्मा गांधी	१)
१४—पन्त का काव्य विकास	सुरेशचन्द्र वर्मा, एम० ए०	२)
१५—माली	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१॥)
१६—मुरलीमनोहर	श्री "कमल"	॥)

मिलने का पता:—

राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स

बलिया

विषय-सूची

अजहूँ न निकसे प्राण कठोर ३०
अल्लाह तेरा जिकर-फिकर ११६
अबधू कामधेनु गहि राखी ४५
अमे बिरहणिया राम १२०
अलह राम छूटी भ्रम मेरा ४७
अबिगत की गति कोई न लहै ११७
अरे मेरा अमर उपाधण हार रे ५८
अरे मेरा समरथ साहिब रे ५८
अरे मेरा सदा संगाती रे ५८
अहो नर नीका है हरि नाम ६५
अहा माई मेरो राम वैरागी ७३
अबिनासी संगि आतमा ७८
अखिल भाव अखिल भगति ८८
अलह आसिकाँ ईमान ९५
आप निरंजन यो कहै ६५
आदि काल अंति काल ६९
आदि है आदि अनादि मेरा ८६
आजि प्रभाति मिलै हरिलाल ९१
आसण रमिदा रामदा ९१
आरती जग जीवन तेरी १०२
आवै राम दया करि मेरे ११०
आव सलोने देखन दे रे ५४
आव वे सजणाँ आव ५५
इब तौ मोहिं लागी बाई ३१
इत घर चोर न मूसै कोई ३८
इब तौ ऐसी बनि आई ४४
इब हम राम सनेही पाया ११३
इत तौ ऐसी बनि आई ४४
इत है नीर नहावन जोग ४८
इहे परम गुर जोगं ७२
इहि विधि वेध्यो मोर मन ८१
इन कामनि घर घालै रे ९३
इहि विधि आरति राम की कीजै १०१
इन बातनि मेरो मन मानै १०४
एकहिं एकै भया अनंदा ११२
ऐसा तत्त अनूपम भाई ७४
ऐसा जनम अमोलिक भाई ३६
ऐसा राम हमारे आवै ३९
ऐसा रे गुर ज्ञान लखाया ४३
ऐसा अवधू राम पियारा १२३
ऐसो खेल बन्यो मेरी माई ४८
ऐन एक सो मीठा लागै ५६
कब मिलसी पीव गृह छाती ६०
कब देखौ नैनहुँ रेख रती १२३
कहो क्यों जन जीवै साइयाँ ८५
कछु चेति रे कहि क्या आया ८५
करणी पोच सोच सुख कहई १०७
का जिवणा का मरणा रे भाई ३४
काहे रे मन राम बिसारे ३६
क्या कीजै मनिषा जनम को ३७
काहे रे नर करौ डफाँड़ ३७
काहू तेरा मरम न जाना रे ५६

का जाणौ राम को गति मेरी ९७
कागा रे करंक परि बोलै ९८
काहे रे बकि मूल गँवावै १०६
काया माहै पिषयी बाट १०६
काइमा कीरति करौंली रे ११५
कैसे जीविये रे ३३
कोई जानै रे मरम रमइया केरो ६२
कोली साल न छाड़ै रे १११
कौण भाँति भल मानै गुसाईं ३२
कौन जनम कहँ जाता है ३६
क्यौं बिसरे मेरा पीव पियारा १२०
खालिक जागै जियरा सोवै ३७
गरब न कीजिये रे ३८
गावहु मंगल चार ६९
गोब्यंदे कैसे तिरिये ५१
गोब्यंद के चरनों ही ल्यौ लाऊँ ११४
गुरमुख पाइये रे ४९
गोविन्द राखो अपनी ओर ६६
गोविन्द कबहुँ मिलै पिय मोरा १०६
चलु रे मन जहँ अमृत वनाँ ७१
चरण देखाड़ तो परमाण ८२
चल चल रे मन तहाँ जाइये ८४
जब मैं रहते की रह जानी ९४
जब तें साचे की सुधि पाई १०५
जात कत मद कौ मातौ रे ६१
जगत कों कदै न सूझै कोई ६१
जागि रे सब रैणि बिहाणी ६८
जग अंधा नैन न सूझै ७०
जाई रे तन जाइ रे ८१
जागहु जियरा काहै सोवे १०४
जियरा क्यों रहे रे २६
जियरा मेरे सुमिर सार ३३
जियरा काहै रे मूढ़ डोलै ३४
जिनि सत छाडौ बावरे ९३
जियरा राम भजन करि लीजै ९४
जोगी जानि जोन जन जीवै ७२
जोगिया वैरागी-बाबा ७५
जौ रे भाई राम दया नहिं करते ३१
डरिये रे डरिये रे ता थैं ९८
तब हम एक भये रे भाई ४७
तहँ खेलौं नित ही पीव संग ९७
तन ही राम मन ही राम ९७
ता सुख कौं कहो का कीजै ३४
ता कौं काहे न प्राण संभाले ८८
तिस परि जाना वे ११३
तुम सरसी रंग रमाडि ६८
तुम्ह विचि अंतर जिनि परै १११
तूँ है तूँ है तूँ है तेरा ४६
तू राखै त्यूँ ही रहै ८२
तूँ घरि आव सुलच्छन पीव ८८
तौ काहे की परवाह हमारे ५७
तौ निबहै जन सेवक तेरा ८३
दरबार तुम्हारे दरद बन्द पिव ५१
दादू नीका नीका नाव है १२६

दादू दास पुकारे रे ५३
दादू राम सँभारिये १२७
दादू मोंहि भरोसा मोटा ६८
नमो नमो हरि नमो नमो १२१
नाही जल खंडारे ९९
नाँउ रे नाँउ रे सकल १०८
निकट निरंजन लागि रहै ३९
निर्मल तत निर्मल तत ४३
निर्मल तत निर्मल तत ५९
निरंजन जोगी जानि लै चेला ७५
निरंजन क्यूँ रहे ९०
निराकार तेरी आरती १०२
निरंजन यूं रहै १०४
निन्दत सब लोक बिचारा १२३
नीको धन हरि करि मैं ४२
नीकै राम कहत हैं बपुरा ४५
नूर नूर अव्वल आखिर नूर ७६
नूर रहया भरपूर अमीरस ७९
नेटि रे माटा में मिलना १०८
डरिये रे डरिये ११४
पारब्रह्म भजि प्राणियाँ १२२
पिव आव हमारे ५१
पीव ने अपने काज सँवारे ५६
पीव जी सेती नेह नवेली ५८
पीव घरि आवै रे ५९
पीव हौं कहा करौं रे ६४
पीव घर आवनौ ये ७३
पीव पीव आदि अन्त पीव ७६
पीव देखे बिन क्यूँ रहौं ११०
पूजौं पहिले गनपति राई ४१
पंथीड़ा बूझे बिरहणी ११८
बन्दे हाजिराँ हजूर वे ५४
बटाउ रे चलना आजि की कालि ६१
बरहणी बपु न संभारे ८९
बरिखहु राम अमृत धारा १०२
बाबा मरदै मरदाँ गोई ४२
बाबा गुरमुख ज्ञाना रे ५०
बाला सेज हमारी रे ५८
बादला हूँ जानूँ जे रंग भरि रँगिये ६४
बाबा नाहीं दूजा कोई ७५
बाल्हा हूँ थारी तूम्हारो १०५
बाल्हा म्हारा प्रेम भगति १०९
बिरहिण को सिंगार न भावै ३०
बिरह वैराग प्रीति मोहिं दीजै ६७
विषम बार हरि अधार ११६
बौरी तू बार बार बौरानी ७९
भगति मुक्ति अपणी गति ११६
भाई रे घरही में घर पाया ४४
भाई रे ऐसा पंथ हमारा ४८
भाई रे यूँ बिनसै संसारा ५३
भाई रे ऐसा सतगुर कहिये ५७
भाई रे बाजीगर नर खेला ९०
भेष न रीझे मेरा निज भरतार ४१
मन रे राम बिना तन छीजै ३५

मन मेरे कछु भी चेत ५४
मन मति हीन घेरे ५५
मुख बोली स्वामी ११६
मन वैरागी राम कौ ६२
मरिये मीत विछौहे ६३
मन रे बहुरि न ऐसैं होई ६७
मन वावरे हो अनत जिनि जाई ६६
मन माया रातौ भूलै ७४
मद के माते समझत नाहीं ७५
मन रे राम राम रटत क्यूँ ८९
मन रे अंति काल दिन आया ८९
मनसा मन सबद सुरति ९६
मन मोहन हो ९९
मनाँ भजि राम लीजे ११९
मारा नाथ जी तारो नाम ५७
माहरा रे वाहला ने काजै ६३
माया सब संसार की झूठी ८३
माधइयौ माधइयौ मीठौ ८६
मालिक मेहरवान करीम १०३
मुझ थैं कुछ न भयारे ५२
मूल सींचि वधै ज्यूँ बेला १०३
मेरा गुरु आप अकेला खेलै ११७
मेरे मन भैया रामहि राम २९
में मैं करत सबै जग जावै ३४
मेरी मेरी करत जग पीन्हा ३८
मेरे मन लागा सकल करा ४९
मेरा मेरा छाँड़ि गँवारा ५३
मेरा मन मतिवाला मधु पीवै ४०
मेर सिखर चढ़ि बोलि मन मोरा ८२
मेरा तुम ही राखन हार ९२
मेरे जीय की जाणौ जाणराई ९६
मेरे गृह आवहु मेरा मैं १०९
मैं पंथि एक अपार के ७१
में मेरे मैं हेरा ५०
मोहनो मृग देखि बन अंधा ३५
मोहन माधौ कब मिलै १००
ये सम चरित तुम्हारे मोहन ४३
ये मन मेरा पीव सों ११०
ये खुहि पये सब भोग बिलास ११५
रस के रसिया लीन भये ४०
रँग लागौ रे राम कौ ११८
राम नाम जिनि छाड़ै कोई २९
राम संभालिये रे ३१
राम जी नाँव बिना दुःख भारी ११९
राम सुनहु न बिपत हमारी हो ३२
राम बिमुख नरि मरि जाई ३६
राम रस मीठा रे ४०
राम धन खात न खूटै रे ४६
रमैया यहु दुख साले मोहि ४९
राम कृपा करि होहु दयाला ६६
राम जिनि भरमावै हमकौं ८०
राइ रे राइ रे सकल भुवनपति ८४
राम मिल्या ज्यूँ जानिये ९४
राम तूँ मोरा हूँ तोरा ९६

राम नाम तत काहे न बोलै	९१	सिरजन हार थैं सब होई	६३
राम तहाँ प्रगट भये भरपूर	१००	सुख दुख संसा दूर किया	७७
राम की राती भई माती	१०१	सुन्दर राम रामा परम	१११
रे मन मरणो कहा डेराई	७४	सुणि तू मना रे	१२१
रे मन साथी माहरा तूँ	७८	सो दिन अबहूँ आवैगा	३०
सत संगति मगन पाइये	३६	सोई सुहागिन साच सिंगार	४१
सब हम नारी एक भतार	४७	सोई देव पूजौं जेठा की	११२
सजनी रजनी घटती जाई	६२	हमारे तुम ही हो रखवाल	६०
सदगति साधवा रे	७०	हरि हाँ दिखावौ नैना	६५
सन्तो राम बाण मोंहि लागे	७१	हरि नाम देहु निरंजन तेरा	६६
समरथ मेरा साइंया	८१	हरि के चरण पकरी मन मेरा	५७
साध कहैं उपदेस बिरहणी	११८	हरि भजताँ किमि भाजिये	१२१
साहिब जी सति मेरा रे	४६	हिन्दू तुरक न जाने दोइ	१२२
सांईबिना	७३	हंस सरोवर तँह रमै	७७
साईं सिरजन हार तूँ	७६	हम पाया हम वाया रे भाई	८७
साधौ हरि सो हेत हमारा	८०	हालु असाँ जो लाल रे	५८
साचा सत गुर राम मिलावै	९०	हौं हमरे जियरा राम गुण	६०
साजनिया नेह तोरो रे	९५	हुसियार हाकिम न्याव है	८७
संग न छाड़ौ मेरा पावन पीव	३२	हो ऐसा ज्ञान ध्यान गुर बिना	८०

संत दादू दयाल

जीवन चरित्र

संत दादू दयाल की जन्मतिथि तथा उनके जन्म-स्थान के संबंध में मतभेद है; किन्तु विद्वत् समाज का कहना है कि उनका जन्म ईस्वी सन् १५४४ में हुआ था।

दादू-पंथियों के कथनानुसार उनका जन्म-स्थान अहमदाबाद है। पादरी जान टामस और पंडित चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी भी इस कथन की पुष्टि करते हैं। महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी ने उनका जन्म-स्थान जौनपुर माना है, किन्तु उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार पण्डित सुधाकरजी का अनुमान सही नहीं है।

सन्त दादू की जाति के सम्बन्ध में भी काफी मतभेद है। पण्डित सुधाकरजी के कथनानुसार सन्त दादू मोची थे। वे मोठ बनाने का पेशा करते थे। निम्न साखी से इसकी पुष्टि भी हो जाती है:—

साचा समरथ गुर मिल्या, तिन तत दिया बताय।
दादू मोट महाबली, सब घृत मथि कर खाय।

किन्तु पादरी जान टामसन सन्त दादू की जाति धुनिया बतलाते हैं और दादू-पन्थी तो उन्हें गुजराती ब्राह्मण कहते हैं।

हमारे मतानुसार तो महान विभूतियों की जाति के सम्बन्ध में प्रश्न उठाना ही निरर्थक है, क्योंकि दादू दयाल अपने त्याग, तपस्या एवं आत्मबल के कारण मानव के सोपान से उठकर उस ऊँचाई पर पहुँच गये थे, जहाँ पहुँचने पर मानव की गणना परिमानव में होने लगती है।

संत दादू का आविर्भाव

दादू पंथियों के कथनानुसार एक टापू में कुछ योगी-यती भगवान की उपासना में लीन थे। उनमें से एक को यह आकाशवाणी हुई कि तुम भारतवर्ष में जाओ, और वहाँ पर जाकर माया-रूपी भ्रम-जाल में फँसे हुए जीवों को अपने सदुपदेशों से मुक्त करो। योगिराज उस टापू से घूमते-फिरते अहमदाबाद पहुँचे। अहमदाबाद में लोदीराम नागर ब्राह्मण मिला। उसको पुत्र नहीं था। पुत्र के लिए वह बहुत ही लालायित रहता था। उस ब्राह्मण ने योगिराज से पुत्ररत्न पाने के लिए बर माँगा।

योगिराज ने उस ब्राह्मण से कहा कि तुम पौ फटने के पूर्व ही साबरमती के तट पर जाओ । वहाँ जाने पर तुम्हारी अभिलाषा पूरी होगी ।

योगिराज के आदेशानुसार लोदीराम नागर दूसरे दिन पौ फटने के पूर्व ही साबरमती के तट पर जा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर वे क्या देखते हैं कि एक बच्चा नदी में बह रहा है । वे उस बच्चे को नदी से निकाल कर प्रसन्न होकर अपने घर ले गये और लालन-पालन किया । दादू-पंथियों का कहना है कि योगिराज ही ने अपने तपोबल से बच्चे का रूप धारण कर लिया था । बाद में दादू दयाल के नाम से उनका आविर्भाव हुआ । इस सम्बन्ध में दादूदयाल की यह साखी प्रसिद्ध है:—

सबद बँधाना साह के, ता थैं दादू आया ।
दुनियाँ जीवी बापुड़ी, सुख दरसन पाया ।

संत दादू की महानता

दादू दयालजी बचपन ही से सौम्य, सौष्ठव एवं उदार थे । उनकी दयालुता अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी, इसीलिए लोग उन्हें दादू से दादू दयाल कहने लगे। उनकी सौष्ठवता के सम्बन्ध में निम्न दृष्टान्त दिया जाता है:—

एक काजी था । दादू दयाल और उसके बीच कोई प्रसंग छिड़ा हुआ था । बात-चीत के दौरान में काजी ने आवेश में आकर दादू दयाल के मुँह पर जोर से चाँटा मारा, परन्तु दादू दयाल ने प्रभु ईसा मसीह की भाँति मानवता के सामने बर्बरता को घुटने टेकने पर विवश कर दिया । उन्होने मंजुल मुस्कान के साथ उस काजी से कहा—

"लो भाई और मार कर अपना दिल ठंढा कर लो।"

दादू दयाल के ये शब्द सुनकर लज्या के मारे उस काजी का सिर झुक गया। उसने मन-ही-मन घोर पश्चाताप किया।

संत दादू की महानता का एक प्रमाण और भी मिलता है। दकियानूसी विचार वाले ब्राह्मण दादू दयाल के घोर विरोधी थे, क्योंकि दादू दयाल के विचारों ने उस समय नवजागरण आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया जिसके फलस्वरूप लोगों में चेतना पैदा होने लगी। ब्राह्मणों की दोहन की चक्की बन्द होने लगी। १११ नम्बर के साइन बोर्ड लगाने वाले ब्राह्मण बौखला उठे।

ये ब्राह्मण बुरी तरह सन्त दादू दयाल के पीछे पड़ गये। एक बार दादू दयालजी समाधि लगाकर बैठे थे। कुछ ब्राह्मणों ने उनका प्राणान्त कर देने के लिए उनकी समाधि-स्थान के खुले द्वार को ईंट-पत्थरों से बन्द कर दिया।

यह समाचार बिजली की भाँति चारों ओर फैल गया। दादू दयाल के भक्तों का वहाँ पर ताँता लग गया। लोगों ने समाधि के बन्द द्वार को खोला। लोग उन दुष्ट ब्राह्मणों को दण्डित करने के लिए उत्तेजित हो उठे, किन्तु सन्त दादू दयालजी ने लोगों से कहा:—

"आप लोग उत्तेजित मत होइये। जिन लोगों ने समाधि-द्वार को ईंट-पत्थरों से बन्द किया था वे धन्यवाद के पात्र हैं न कि दण्ड के—क्योंकि ऐसा कर उन लोगों ने मुझे भगवान के चरणों में देर तक लीन रहने का अवसर दिया।"

लोकप्रियता के कारण

अब सन्त दादू दयाल की साधुता, उदारता एवं शौष्ठवता की चर्चा राजप्रासादों से लेकर झोंपड़ियों तक पहुँच गयी। संवत् १६४२ में दादू दयाल जी भ्रमण करते-करते फतेहपुरसीकरी पहुँचे। वहाँ पर शाहंशाह अकबर से उनकी मुलाकात हुई। बादशाह सलामत ने दादू दयाल से निम्न प्रश्न किया:—

"खुदा की जात, अंग, वजूद और रंग क्या है ?"

दादू दयाल जी ने बादशाह सलामत को यह उत्तर दिया कि:—

"इसक अलक की जाति है, इसक अलक का अंग।
इसक अलक औजूद है, इसक अलक का रंग।"

शाहंशाह अकबर सन्त दादू दयाल का यह उत्तर सुनकर बाग़-बाग़ हो उठे। कहते हैं कि बादशाह अकबर सन्त दादूदयाल को अपने यहाँ रखकर अपने दरबार की शोभा बढ़ाना चाहते थे; किन्तु जो व्यक्ति एक बार अलख जगाता है उसको राजप्रासादों की अपेक्षा वन-वन अलख जगाना ही अच्छा लगता है। अकबर बादशाह की अभिलाषा पूर नहीं हुई।

संत दादू का पर्यटन

संवत् १६३० में संत दादू दयाल साँभर गये, वे वहाँ पर लगभग ६ वर्ष तक रहे। वहाँ पर असंख्य व्यक्ति उनके अनुयायी हो गये। उनके सदुपदेशों

का सर्वसाधारण के जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। ढोंगी ब्राह्मणों के भ्रामक विचारों से टूट-टूक हुई नैतिकता में पुनः सजीवता आ गयी। दादू-पंथियों ने समाज के ढाँचा में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया। बौद्धिक क्रान्ति के कारण प्रतिक्रियावादियों के रंग फीके पड़ गये। ऐसा प्रतीत होता था मानो जल-थल-नभ—सर्वत्र दादू दयाल का उपदेशामृत की वर्षा हो रही हो।

साँभर से संत दादू दयाल जी आँबेर पहुँचे। वहाँ पर वे लगभग चौदह वर्ष तक रहे। उन्होंने जयपुर, मारवाड़, बीकानेर और नराना आदि प्रसिद्ध स्थानों का भ्रमण किया। संत दादू नराना में कुछ समय तक रहे। इसके बाद कुछ समय तक वे नराने के चटियल मैदानों तथा ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों को तय कर प्राकृतिक छटा को देखते। हुए वनैले जीव-जन्तुवों के साथ क्रीड़ा करते रहे।

संवत् १६६० में नराने में ही संत दादू दयाल का स्वर्गवास हो गया। चोला छूट जाने पर बहुतेरे साधुओं की उसी स्थान पर समाधि बनती है। अब इस स्थान का बहुत महत्व है। अक्सर साधुवों की जमात उस पुनीत स्थान पर आती रहती है।

दादू पंथियों के महत्वपूर्ण अखाड़े

दादू सम्प्रदाय के देश भर में बावन महत्वपूर्ण अखाड़े हैं। इन अखाड़ों के अलग-अलग महंत हैं। इन अखाड़ों की अधिकांश संख्या जयपुर, अलवर, मारवाड़, बीकानेर, मेवाड़, गुजरात और पंजाब में हैं। पुनीत नगरी काशी में भी इस सम्प्रदाय का एक अखाड़ा है।

अखाड़ों का महत्व फीका क्यों ?

जिस प्रकार गौतमबुद्ध के देहान्त हो जाने के बाद विहार और मठों की महिमा उनके अनुयायियों की भोगविलासिता के कारण घट गयी ठीक वही दशा दादू सम्प्रदाय के अखाड़ों की भी है। मानिये या न मानिये परन्तु यह सच है कि इन अखाड़ों के महंत अब देश के लिए भारस्वरूप बन गये हैं। इनसे न तो देश का मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास ही हो पाता है और न तो चोट खाई नैतिकता की मरहमपट्टी ही की जा सकती है। इन अखाड़ों के महंत तपस्वी-जीवन बिताने के बजाय विलासप्रिय बन गये हैं! संत दादू दयाल ने कभी पैसा स्पर्श नहीं किया, किन्तु इन अखाड़ाधीशों के पास धन-धान्य का बाहुल्य है याने ये महंत राजसी जीवन बिता रहे हैं। यही कारण है कि अब इन अखाड़ों का महत्व फीका पड़ गया है।

दो श्रेणियाँ

दादू सम्प्रदाय में दो प्रकार के साधु पाये जाते हैं:—

(१) भेषधारी विरक्त साधु—ये साधु गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं। और भजन तथा पठन-पाठन में अपना समय व्यतीत करते हैं।

(२) नागा साधु—ये साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं। ये खेती-बाड़ी, फौज की नौकरी तथा वैद्यकी करते हैं और सूद पर रुपये चलाते हैं।

परन्तु ये साधु शादी नहीं करते। गृहस्थों के लड़कों को अपना चेला बनाते हैं, इस प्रकार इनका वंश चलता है।

चोला छूट जाने पर लाशों को पशु-पक्षियों के भक्षणार्थ जंगल में छोड़ आना ही दादू ने उत्तम कहा है। दादू दयाल जी की निम्न साखी से यह प्रमाणित भी हो जाता है:—

"हरि भज साफल जीवना, पर उपगार समाइ।
दादू मरणा तहँ भला, जहँ पशु पंछी खाइ॥"

दादू पंथी और कबीर पंथी

कबीर पन्थी माथे पर तिलक लगाते हैं और गले में कण्ठी पहनते हैं; परन्तु दादू पन्थी इसके विरोधी हैं। ये लोग टोपा या मुरायठ पहनते हैं और 'सत्त राम' कहकर अभिवादन करते हैं। कबीर पन्थियों का अब भी तगड़ा प्रचार है। लोग अब भी बराबर सन्त कबीर का भजन गाते हैं; परन्तु सन्त दादू के भजनों का प्रचार कम है।

सदुपदेश का विषय

सन्त दादू दयाल जी के सदुपदेश के विषय निम्न थे:—

(१) परमेश्वर की उपासना अजपा जाप।
(२) मन को स्थिर करने के साधन।
(३) परमेश्वर का सच्चिदानन्द स्वरूप।
(४) भगवान के परम रूप का ध्यान और धारणा।
(५) अमृत बिन्दु का पान।
(६) ब्रह्म का साक्षातकार।

(७) अनहद बाजे में मग्न होना।

(८) भगवान की निर्गुण आराधना।

सन्त दादू की वाणी और भाषा

सन्त दादू दयाल जी की वाणी की भाषा अवश्य ही उस युग के सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा होगी और लोग सरलतापूर्वक उनकी वाणी में प्रयोग किए गये शब्दों को हृदयंगम कर लेते होंगे, किन्तु आज के युग में उन शब्दों को आसानी से समझना उसी प्रकार दुरूह है जिस प्रकार पाली भाषा का समझना। उनकी वाणी के अवलोकन से पता चलता है कि उसमें गुजराती, मराठी, पंजाबी, फारसी और सिन्धी भाषा के शब्दों की भरमार है। उदाहरणार्थः—

गुजराती भाषा के शब्द

'कब मिलसी पिव गृह छाती।'

'गोबिन्दा जोइबा दे रे।'

'तुम सरसी रंग रमाणि।'

'बार बार कहूँ रे बेला।'

'वाल्हा म्हारा।'

'नहिं मेलूँ राम नहिं मेलूँ।

'हूँ जाइ रही रे बाट।'

सिन्धी भाषा के शब्द

'हालु असाँ जो लाल रे ।'

'आसण रमिदा राम दा ।'

पंजाबी भाषा के शब्द

'आव वे सजणाँ आव ।'

मराठी भाषा के शब्द

'मेरे गृह आवहु गुर मेरा ।'

फ़ारसी भाषा के शब्द

'बाबा मरदे मरदाँ गोइ ।'

—:o:—

सन्त दादू और उनकी वाणी

द्वितीय खण्ड

पद्य

दादू दयाल की वाणी

१

राम नाम जिनि छाड़ै कोई। राम कहत जन निर्मल होई ॥ १ ॥
राम कहत सुख संपति सार। राम नाम तिरि लंघे पार ॥ २ ॥
राम कहत सुधि बुधि मति पाई। राम नाम जिनि छाडौ भाई॥ ३ ॥
राम कहत जन निर्मल होइ। राम नाम कहि कुसमल धोइ॥ ४ ॥
राम कहत की को नहिं तारे। यहु तत दादू प्राण हमारे॥ ५ ॥

२

मेरे मन भैया राम कहौ रे ॥ टेक ॥
राम नाम मोहिं सहजि सुनावै। उनहिं चरण मन कीन रहौ रे॥ १ ॥
राम नाम ले संत सुहावै। कोई कहै सब सीस सहौ रे॥ २ ॥
वाही सौं मन जोरे राखौ। नीके रासि लिये निबहौ रे ॥ ३ ॥
कहत सुनत तेरो कछू न जावै। पाप निछेदन सोई लहौ रे ॥ ४ ॥
दादू रे जन हरि गुण गावो। कालहि जालहि फेरि दहौ रे ॥ ५ ॥

३

जियरा क्यौं रहै रे, तुम्हरे दरसन बिन बेहाल ॥ टेक ॥
परदा अंतरि करि रहै, हम जीव केहि आधार।

सदा सँगाती प्रीतमा, अब के लेहु उबार ॥ १ ॥
गोप गोसाईं ह्वै रहै, इब काहे न परगट होइ।
राम सनेही संगिया, दूजा नाहीं कोइ ॥ २ ॥
अंतरजामी छिपि रहे, हम क्यों जीवैं दूरि।
तुम बिन व्याकुल केसवा, नैन रहे जल पूरि ॥ ३ ॥
आप अपरछन ह्वै रहे, हम क्यौं रैनि बिहाइ।
दादू दरसन कारणे, तलफि तलफि जिव जाइ ॥ ४ ॥

४

अजहूँ न निकसै प्राण कठोर ॥ टेक ॥
दरसन बिन बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर ॥ १ ॥
चारि पहर चारौं युग बीते, रैनि गँवाई भोर ॥ २ ॥
अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहुँ रहे चित चोर ॥ ३ ॥
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर ॥ ४ ॥
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर ॥ ५ ॥

५

सो दिन कबहूँ आवैगा। दादूड़ा पिव पावैगा ॥ टेक ॥
क्यूँ ही अपणे अंगि लगावैगा। तब सब दुख मेरा जावैगा ॥ १ ॥
पिव अपणे बैन सुनावैगा। तब आनँद अँगि न मावैगा ॥ २ ॥
पिव मेरी प्यास मिटावैगा। तब आपहि प्रेम पिलावैगा ॥ ३ ॥
दे अपना दरस दिखावैगा। तब दादू मंगल गावैगा ॥ ४ ॥

६

बिरहणि कौं सिंगार न भावै। है कोइ ऐसा राम मिलावै ॥ टेक ॥
बिसरे अंजन मंजन चीरा। बिरह बिथा यहु व्यापै पीरा ॥ १ ॥

नौसत थाके सकल सिंगारा। है कोइ पीड़ मिटावनहारा ॥ २ ॥
देह ग्रेह नहिं सुद्धि सरीरा। निस दिन चितवत चात्रिग नीरा ॥ ३ ॥
दादू ताहि न भावै आन। राम बिना भई मृतक समान ॥ ४ ॥

७

इब तौ मोहिं लागी बाइ, उन निहचल चित लियो चुराइ ॥ टेक ॥
आन न रुचै और नहिं भावै, अगम अगोचर तह मन जाइ।
रूप न रेख बरण कहौं कैसा, तिन चरणौं चित रह्या समाइ ॥ १ ॥
तिन चरणौं चित सहजि समाना, सो रस भीना तहँ मन धाइ,
अब तौ ऐसी बनि आई, बिष तजै अरु अमृत खाइ ॥ २ ॥
कहा करौं मेरा बस नाहीं, और न मेरे अंगि सुहाइ।
पल इक दादू देखन पावै, तौ जनम जनम की त्रिषा बुझाय ॥ ३ ॥

८

राम सँभालिये रे, विषम दुहेली बार ॥ टेक ॥
मंझि समंदा नावरी रे, दूड़े खेवट बाझ।
काढ़नहारा को नहीं रे, एक राम बिन आज ॥ १ ॥
पार न पहुँचै राम बिन, भेरा भौजल माहिं।
तारणहारा एक तूँ, दूजा कोई नाहिं ॥ २ ॥
पार परोहन तौ चलै, तुम खेवहु सिरजनहार।
भौसागर में डूबिहै, तुम बिन प्राण-अधार ॥ ३ ॥
औघट दरिया क्यों तिरै, बोहिथ बैसनहार।
दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार ॥ ४ ॥

९

जौ रे भाई राम दया नहिं करते।
नवका नाँव खेवट हरि आपै, यों बिन क्यों निस्तरते ॥ टेक ॥

करनी कठिन होत नहिं मोपै, क्यों कर ये दिन भरते।
लालच लागि परत पावक में, आपहि आपै जरते ॥ १ ॥
स्वादहिं संग बिषै नहिं छूटै, मन निहचल नहिं धरते।
खाय हलाहल सुख के ताईं, आपै ही पचि मरते ॥ २ ॥
मैं कामी कपटी क्रोध काया में, कूप परत नहिं डरते।
करवत काम सीस धरि अपने, आपहि आप बिहरते ॥ ३ ॥
हरि अपना अंग आप नहिं छाड़ै, अपनी आप बिचरते।
पिता क्यौं पूत कों मारै, दादू यों जन तरते ॥ ४ ॥

१०

संग न छाडौं मेरा पावन पीव। मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥ टेक ॥
संगि तुम्हारे सब सुख होइ। चरण कँवल मुख देखौं तोहि ॥ १ ॥
अनेक जतन करि पाया सोइ। देखौं नैनौं तौ सुख होइ ॥ २ ॥
सरणि तुम्हारी अंतरि बास। चरण कँवल तहँ देहु निवास ॥ ३ ॥
अब दादू मन अनत न जाइ। अंतरि बेधि रह्यो ल्यौ लाइ ॥ ४ ॥

११

राम सुनहु न बिपति हमारी हो।
तेरी मूरति की बलिहारी हो ॥ टेक ॥
मैं जु चरण चित चाहना। तुम सेवग साधारना ॥ १ ॥
तेरे दिन प्रति चरण दिखावना। करि दया अंतरि आवना ॥ २ ॥
जन दादू बिपति सुनावना। तुम गोबिन्द तपति बुझावना ॥ ३ ॥

१२

कौण भाँति भल मानै गुसाईं। तुम भावै सो मैं जानत नाहीं ॥टेक॥
कै भल मानै नाचें गायें। कै भल मानै लोक रिझायें ॥ १ ॥

कै भल मानै तीरथ न्हायें। कै भल मानै मूँड मुडायें ॥ २ ॥
कै भल मानै सब घर त्यागी। कै भल मानै भये बैरागी ॥ ३ ॥
कै भल मानै जटा बधायें। कै भल मानै भसम लगायें ॥ ४ ॥
कै भल मानै बन बन डोलें। कै भल मानै मुखहि न बोलें ॥ ५ ॥
कै भल मानै जप तप कीयें। कै भल मानै करवत लीयें ॥ ६ ॥
कै भल मानै ब्रह्म गियानी। कै भल मानै अधिक धियानी ॥ ७ ॥
जे तुम भावै सो तुम्ह पै आहि। दादू न जाणै कहि समझाइ ॥ ८ ॥

१३

कैसे जीविये रे, साईं संग न पास।
चंचल मन निहचल नाहीं, निस दिन फिरै उदास ॥ टेक ॥
नेह नहीं रे राम का, प्रीति नहीं परकास।
साहिब का सुमिरण नहीं, करै मिलन की आस ॥ १ ॥
जिस देखे तूँ फूलिया, पाणी प्यंड बधाना मास।
सो भी जलि बलि जाइगा, झूठा भोग बिलास ॥ २ ॥
तौ जिवने में जीवना रे, सुमिरै साँसै साँस।
दादू परगट पिव मिलै, तौ अंतरि होइ उजास ॥ ३ ॥

१४

जियरा मेरे सुमिर सार, काम क्रोध मद तजि बिकार ॥ टेक ॥
तूँ जिनी भूलै मन गँवार, सिर भार न लीजै मानि हार ॥ १ ॥
सुणि समझायौ बारबार, अजहुँ न चेतै हो हुसियार ॥ २ ॥
करि तैसैं भव तिरिये पार, दादू इब थैं यहि बिचार ॥ ३ ॥

१५

जियरा काहे रे मूढ़ डोले।
बनबासी लाला पुकारै, तुहीं तुहीं करि बोलै ॥ टेक ॥
साथ सवारी लै न गयौ रे, चालण लागौ बोलै।
तब जाइ जियरा जाणैगी रे, बाँधे ही कोइ खोलै ॥ १ ॥
तिल तिल माहैं चेत चली रे, पंथ हमारा तोलै।
गहिला दादू कछू न जाणै, राखि ले मेरे मौलै ॥ २ ॥

१६

ता सुख कौं कहौ का कीजै। जा थैं पल पल यहु तन छीजै ॥ टेक ॥
आसन कुंजर सिरि छत्र धरी जै। ता थैं फिरि फिरि दुक्ख सहीजै ॥१॥
सेज सँवारि सुन्दरि संगि रमीजै। खाइ हलाहल मरम मरीजै ॥२॥
बहु विधि भोजन मानि रुचि लीजै। स्वाद संकुटि भ्रम पासि परीजै ॥३॥
ये तजि दादू प्राण पतीजै। सब सुख रसना राम रमीजै ॥४॥

१७

का जिवना का मरणा रे भाई। जो तैं राम न रमसि अघाई ॥ टेक ॥
का सुख संपति छत्र-पति राजा। बनखंडि जाइ बसे केहि काजा ॥ १ ॥
का बिद्या गुन पाठ पुराना। का मूरपि जो तैं राम न जाना ॥ २ ॥
का आसन करि अहि निसि जागे। का परि सोवत राम न लागे ॥ ३ ॥
का मुकता का बंधे होई। दादू राम न जाना सोई ॥ ४ ॥

१८

में मैं करत सबै जग जावै, अजहूँ अंध न चेते रे।
यहु दुनिया सब देख दिवानी, भूलि गये हैं केते रे ॥ टेक ॥

मैं मेरे में भूलि रहे रे, साजन सोई बिसारा।
आया हीरा हाथि अमोलिक, जनम जुवा ज्यूँ हारा ॥ १ ॥
लालच लोभैं लागि रहे रे, जानत मेरी मेरा।
आपहि आप बिचारत नाहीं, तूँ काको को तेरा ॥ २ ॥
आवत है सब जाता दीसै, इन में तेरा नाहीं।
इन सौं लागि जनम जिन खोवै, सोधि देखु सचु माहीं ॥ ३ ॥
निहचल सौं मन मानै मेरा, साईं सौं बनि आई।
दादू एक तुम्हारा साजन, जिन यहु झुरकी लाई ॥ ४ ॥

१९

मोह्यो मृग देखि बन अंधा। सूझत नाहीं काल के फंधा ॥ टेक ॥
फूल्यौ फिरत सकल बन माहीं। सिर साँधे सर सूझत नाहीं ॥ १ ॥
उममद मादौ बन के ठाट। छाडि चल्यौ सब बाहर बाट ॥ २ ॥
फँध्यो न जानै बन बन के चाइ। दादू स्वाद बँधानौ आई ॥ ३ ॥

२०

मन रे राम बिन तन छीजै।
जब यहु जाइ मिलै माटी में, तब कहु कैसैं कीजै ॥ टेक ॥
पारस परसि कंचन करि लीजै, सहज सुरति सुखदाई।
माया बेलि बिषै फल लागे, ता परि भूलि न भाई ॥ १ ॥
जब लग प्राण प्यंड है नीका, तब लग ताहि जिनि भूलै।
यहु संसार सेंबल के सुख ज्यूँ, ता पर तूँ जिनि फूलै ॥ २ ॥
औसर येह जानि जग जीवन, समझि देखि सचु पावै।
अंग अनेक आन मति भूलै, दादू जिनि डहकावै ॥ ३ ॥

२१

काहे रे मन राम बिसारे। मनिषा जनम जाइ जिय हारे ॥ टेक ॥
मात पिता को बंध न भाई। सब ही सुपिना कहा सगाई ॥ १ ॥
तन धन जोबन झूठा जाणी। राम हृदै धरि सारँ प्राणी ॥ २ ॥
चंचल चित बित झूठी माया। काहे न चैतै सो दिन आया ॥ ३ ॥
दादू तन मन झूठा कहिये। राम चरण गहि काहे न रहिये ॥ ४ ॥

२२

ऐसा जनम अमोलिक भाई। जा में आइ मिलै राम राई ॥ टेक ॥
जा में प्राण प्रेम रस पीवै। सदा सुहाग सेज सुख जीवै ॥ १ ॥
आतम आइ राम सूँ राता। अखिल अमर धन पावै थाता ॥ २ ॥
परगट परसन दरसन पावै। परम पुरिष मिलि माहिं समावै ॥ ३ ॥
ऐसा जनम नहीं नर आवै। सो क्यौं दादू रतन गँवावै ॥ ४ ॥

२३

सतसंगति मगन पाइये। गुर परसादैँ राम गाइये ॥ टेक ॥
प्राकाश धरनि धरीजै धरनी आकाश कीजै। सुन्नि माहैं निरखि लीजै ॥१॥
निरखि मुकताहल माहैं साइर आयौ। अपने पिया हौं धावत खोजत पायौ॥
सोच साइर अगोचर लहिये। देव देहरे माहैं कौन कहिये ॥
हरि कौ हितारथ ऐसौ लखै न कोई। दादू जे पीव पावै अमर होई ॥

२४

कौन जनम कहँ जाता है अरे भाई। राम छाँडि कहाँ राता है ॥टेक॥
मैं मैं मेरी इन सौं लागी। स्वाद पतंग न सूझै आगी ॥ १ ॥

बिषिया सौं रत गरब गुमान। कुंजर काम बँधे अभिमान ॥ २ ॥
लोभ मोह मद माया फंद। ज्यौं जल मीन न चेतै अंध ॥ ३ ॥
दादू यह तन यौंही जाइ। राम बिमुख मरि गये बिलाई ॥ ४ ॥

२५

क्या कीजै मनिषा जनम कौं, राम न जपै गँवारा।
माया के मद मातौ बहै, भूलि रहा संसारा रे ॥ टेक ॥
हिरदे राम न आवई, आवै बिषै विकारा रे।
हरि मारग सूझै नहीं, कूप परत नहिं बारा रे ॥ १ ॥
आपा आगिनि जु आप में, ता थैं अहि निसि जरै सरीरा रे।
भाव भगति भावै नहीं पीवै न हरि जल नीरा रे ॥ २ ॥
मैं मेरी सब सूझई, सूझै माया जाला रे।
राम नाम सूझै नहीं, अध न सूझै काला रे ॥ ३ ॥
ऐसेहिं जनम गँवाइया, जित आया तित जाय रे।
राम रसायण ना पिया, जन दादू हेत लगाय रे ॥ ४ ॥

२६

खालिक जागे जियरा सोवै। क्योंकरि मेला होवै ॥ टेक ॥
सेज एक नहिं मेला। ता थैं प्रेम न खेला ॥ १ ॥
साईं संग न पावा। सोवत जनम गँवावा ॥ २ ॥
गाफिल नींद न कीजै। आव घटै तन छीजै ॥ ३ ॥
दादू जीव अयाना। झूठे भरम भुलाना ॥ ४ ॥

२७

काहे रे नर करौ डफाँड़। अति काल घर गोर मसाण ॥ टेक ॥
पहलै बलवँत गये बिलाइ। ब्रह्मा आदि महेसुर जाइ ॥ १ ॥

आगैं होते मोटे मीर । गये छाडि पैगंबर पीर ॥ २ ॥
काची देह कहा गरबाना । जे उपज्या सो सबै बिलाना ॥ ३ ॥
दादू अमर उथावणहार । आपै आप रहै करतार ॥ ४ ॥

२८

मेरी मेरी करत जग षीन्हा, देखत ही चलि जावै ।
काम क्रोध त्रिसना तन जालै, ता थैं पार न पावै ॥ टेक ॥
मूरिष ममिता जनम गँवावै, भूलि रहे इहि बाजी ।
बाजीगर कूँजानत नाहीं, जनम गँवावै बादी ॥ १ ॥
परपँच पंच करै बहतेरा, काल कुटुँब के ताई ।
विष के स्वादि सबै ये लागे, ता तैं चीन्हत नाहीं ॥ २ ॥
एता जिय में जाणत नाहीं, आइ कहाँ चलि जावै ।
आगैं पीछैं समझै नाहीं, मूरख यौं डहकावै ॥ ३ ॥
ये सब भरम भानि भल पावै, सोधि लेहु सो साईं ।
सोई एक तुम्हारा साजन, दादू दूसर नाहीं ॥ ४ ॥

२९

इत घर चोर न मूसै कोई । अंतरि है जे जानै सोई ॥ टेक ॥
जागहु रे जन तत्त न जाई । जागत है सो रहा समाई ॥ १ ॥
जतन जतन करि राखहु सार । तसकरि उपजै कौन बिचार ॥ २ ॥
इब करि दादू जाणै जे । तौ साहिब सरणागति ले ॥ ३ ॥

३०

गरब न कीजिये रे, गरबैं होइ बिनास ॥
गरबैं गोबिंद ना मिलै, गरबैं नरक निवास ॥ टेक ॥
गरबैं रसातलि जाइये, गरबैं घोर अँधार ।

गरबैं भोजल डूबिये, गरबैं वार न पार ॥ १ ॥
गरबैं पार न पाइये, गरबैं जमपुर जाइ ।
गरबैं को छूटै नहीं, गरबैं बंधे आइ ॥ २ ॥
गरबैं भावन ऊपजै, गरबैं भगति न होइ ।
गरबैं पिव क्यों पाइये, गरब करे जिनि कोइ ॥ ३ ॥
गरबैं बहुत बिना हैं, गरबैं बहुत बिकार ।
दादू गरब न कीजिये, सनमुख सिरजनहार ॥ ४ ॥

३१

निकट निरंजन लागि रहे । तब हम जीवत मुकत भये ॥ टेक ॥
मरि करि मुकति जहाँ जग जाइ । तहाँ न मेरा मन पतियाइ ॥ १ ॥
आगैं जनम लहैं औतारा । तहाँ न मानै मना हमारा ॥ २ ॥
तन छूटे गति जौ पद होइ । मिरतक जीव मिलै सब कोइ ॥ ३ ॥
जीवत जनम सुफल करि जाना । दादू राम मिलै मनमाना ॥ ४ ॥

३२

राम बिमुख जग मरि मरि जाइ । जीवै संत रहै ल्यौलाइ ॥टेक॥
लीन भये जे आतम रामा । सदा सजीवन कीये नामा ॥ १ ॥
अमृत राम रसायण पीया । तार्थैं अमर कबीरा कीया ॥ २ ॥
राम राम कहि राम समाना । जन रैदास मिले भगवाना ॥ ३ ॥
आदि अंत केते कलि जागे । अमर भये अबिनासी लागे ॥ ४ ॥
राम रसायण दादू माते । अबिचल भये राम रँग राते ॥ ५ ॥

३३

ऐसा राम हमारे आवै । वार पार कोई अंत न पावै ॥ टेक ॥
हलका भारी कह्या न जाइ । मोलमाप नहिं रह्या समाइ ॥ १ ॥
कीमति लेखा नहिं परिमाण । सब पचि हारे साध सुजाण ॥ २ ॥

आगौ पीछौ परिमित नाहीं। केते पारिष आवहिं जाहीं ॥ ३ ॥
आदि अंत मधि लखै न कोइ। दादू देखे अचरज होइ ॥ ४ ॥

३४

राम रस मीठा रे, कोइ पीवै साधु सुजाण।
सदा रस पीवै प्रेम सौं, सो अबिनासी प्राण ॥ टेक ॥
इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा बिसुन महेस।
सुर नर साधू संत जन, सो रस पीवै सेस ॥ १ ॥
सिधि साधिक जोगी जती, सती सबै सुखदेव।
पिवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव ॥ २ ॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास।
पिवत कबीरा ना थक्या, अजहूँ प्रेम पियास ॥ ३ ॥
यहु रस मीठा जिन पिया, सो रस ही माहिं समाइ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ ॥ ४ ॥

३५

रस के रसिया लीन भये। सकल सिरोमणि तहाँ गये ॥ टेक ॥
राम रसाइण अमृत माते। अबिचल भये नरक नहिं जाते ॥ १ ॥
राम रसाइण भरि भरि पीवै। सदा सजीवनि जुग जुग जीवै ॥ २ ॥
राम रसाइण त्रिभुवन सार। राम रसिक सब उतरे पार ॥ ३ ॥
दादू अमली बहुरि न आये। सुख सागर ता माहिं समाये ॥ ४ ॥

३६

मेरा मन मतिवाला मधु पीवे, पीवे बारम्बारो रे।
हरि रस राता राम के, सदा रहै इकतारो रे ॥ टेक ॥

भाव भगति भाठी भई, काया कसणी सारो रे।
पोता मेरो प्रेम का, सदा अखंडित धारो रे॥ १॥
ब्रह्म अगनि जोबन जरै, चेतनि चितहि उजासो रे।
सुमति कलाली सावरे, कोइ पीवै बिरला दासो रे॥ २॥
आपा धन सब सौंपिया, तब रस पाया सारो रे।
प्रीति पियाले पीवहीं, छिन छिन बारंबारो रे॥ ३॥
आपा पर नहिं जाणिया, भूलो माया जालो रे।
दादू हरि रस जे पिवै, ताकौं कदे न लागै कालो रे॥ ४॥

३७

भेष न रीझै मेरा निज भरतार। ता थैं कीजै प्रीति विचार॥टेक॥
दुराचारिणी रचि भेष बनावै। सील साच नहिं पिव क्यूँ भावै॥ १॥
कंत न भावै करै सिंगार। डिंभ पणैं रीझै संसार॥ २॥
जो पै पतिव्रता ह्वै नारी। सो धन भावै पिवहिं पियारी॥ ३॥
पीव पहिचानै आन न कोई। दादू सोई सुहागनि होई॥ ४॥

३८

सोई सुहागिन साच सिंगार। तन मन लाइ भजै भरतार॥टेक॥
भाव भगति प्रेम ल्यौ लावै। नारी सोई सार सुख पावै॥ १॥
सहज सँतोष सील जब आया। तब नारी नाह अमोलिक पाया॥२॥
तन मन जौबन सौंपि सब दीन्हा। तब कंत रिझाई आप बसि कीन्हा॥३॥
दादू बहुरि बियोग न होई। पिव सूँ प्रीति सुहागनि सोई॥४॥

३९

पूजौं पहली गणपति राइ, पड़ि हौं पाँऊँ चरणौं धाइ।
आगे होइ करि तीर लगावै, सहजैं अपणे बैन सुनाइ॥ टेक॥

कहौं कथा कुछ कही न जाइ, इक तिल में ले सबै समाइ ।
गुणहुँ गहरी धीर तन देही, ऐसा समरथ सबै सुहाइ ॥ १ ॥
जिस दिसि देखूँ वोही है रे, आप रह्या गिर तरवर छाइ ।
दादू रे आगे क्या होवै, प्रीति पिया कर जोड़ि लगाइ ॥ २ ॥

४०

बाबा मरदे मरदाँ गोइ, एदिल, पाक करदः दोइ ॥ टेक ॥
तर्क दुनियाँ दूर कर दिल, फ़र्ज़ फ़ारिग़ होइ ।
पैव सत परवरदिगार सूँ, आक़िलाँ सिर सोइ ॥ १ ॥
मनि मुरदः हिर्स फ़ानी, नफ़्स रा पैमाल ।
बदी रा बरतर्फ़ करदः, नाँव नेकी ख्याल ॥ २ ॥
ज़िन्दगानी मुरदः बाशद, कुंज क़ादिर कार ।
तालिबाँ रा हक्क़ हासिल, पासबानी यार ॥ ३ ॥
मर्दि मर्दां सालिकाँ, सरि आशिक़ाँ सुलतान ।
हज़ूरी हुशियार दादू, इहै गो मैदान ॥ ४ ॥

४१

नीको धन हरि करि मैं जान्यों, मेरे अषई आई ।
आगे पीछे सोई है रे, और न दूजा कोई ॥ टेक ॥
कबहुँ न छाडौं संग पिया कौ, हरि के दरसन मोही ।
भाग हमारे जे हौं पाऊँ, सरनै आयौ तोही ॥ १ ॥
आनँद भयौ सखी जिय मेरे, चरण कमल कूँ जोई ।
दादू हरि कौ बावरो रे, बहुरि बियोग न होई ॥ २ ॥

४२

ऐसा रे गुर ज्ञान लखाया, आवै जाइ सो दृष्टि न आया ॥ टेक ॥
मन थिर करौंगा नाद भरौंगा, राम रमौंगा रसमाता ॥ १ ॥
अधर रहौंगा करम दहौंगा, एक भजौंगा भगवन्ता ॥ २ ॥
अलख लखौंगा अकथ कथौंगा, मही मथौंगा गोव्यंदा ॥ ३ ॥
अगह गहौंगा अकह कहौंगा, अलह लहौंगा खोजंता ॥ ४ ॥
अचर चरौंगा अजर जरौंगा, अतिर तिरौंगा आनंदा ॥ ५ ॥
यहु तन तारौं बिषै निवारौं, आप उबारौं साधंता ॥ ६ ॥
आऊँ न जाऊँ उनमनि लाऊँ, सहज समाऊँ गुणवंता ॥ ७ ॥
नूर पिछाणौं तेजहि जाणौं, दादू जोतिहि देखंता ॥ ८ ॥

४३

ये सम चरित तुम्हारे मोहनाँ मोहे सब ब्रह्मंड खंडा ।
मोहे पवन पाणी परमेसुर, सब मुनि मोहे रवि चंदा ॥ टेक ॥
साइर सप्त मोहे धरणी धरा, अष्ट कुली पर्वत मेर मोहे ।
तीन लोक मोहे, जगजीवन, सकल भवन तेरी सेव सोहे ॥
सिव बिरंच नारद मुनि मोहे, मोहे सुर सब सकल देवा ।
अगम अगोचर अपार अपरंपरा, को यहु तेरा चरित न जाने ।
ये सोभा तुमकौं सोहै सुन्दर, बलि बलि जाऊँ दादू न जाने ।

४४

निर्मल तत निर्मल तत, निर्मल तत ऐसा ।
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा ॥ टेक ॥
उत्पति आकार नाहीं, जीव नाहीं काया ।
काल नाहीं कर्म नाहीं, रहिता राम राया ॥

सीत नाहीं घाम नाहीं, धूप नाहीं, छाया ।
बाव नाहीं बरन नाहीं, मोह नाहीं माया ।
धरणी आकास अगम, चंद सूर नाहीं ।
रजनी निस दिवस नाहीं, पवना नहिं जाहीं ।।

४५

भाई रे घर ही में घर पाया ।
सहजि समाइ रह्यो ता माहीं, सतगुर खोज बताया ।। टेक ।।
ता घर काज सबै फिरि आया, आपै आप लखाया ।
खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ।। १ ।।
भय औ भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया ।
प्यंड परे जहँ जिव जावै, ता में सहज समाया ।। २ ।।
निहचल सदा चलै नहिं कबहूँ, देख्या सब में सोई ।
ताही सूँ मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ।। ३ ।।
आदि अन्त सोई घर पाया, इब मन अनत न जाई ।
दादू एक रंगै रंग लागा, ता में रह्या समाई ।। ४ ।।

४६

इब तौ ऐसी बनि आई, । राम चरण बिन रह्यो न जाई । टेक।।
गंग जमुन तहँ नीर नहाइ । सुषमन नारी रंग लगाइ ।। १ ।।
आप तेज तन रह्यो समाइ । मैं बलि ताकी देखौं अघाइ ।। २ ।।
बास निरंतर सो समझाइ । बिन नैनहुँ देखि तहँ जाइ ।। ३ ।।
दादू रे यहु अगम अवार । सो धन मेरे अधर अधार ।। ४ ।।

४७

इत तौ ऐसी बन आई । राम चरण बिन रह्यौ न जाई ।।टेक।।
साईँ कूँ मिलवे के कारण, त्रिकुटी संगम नीर नहाई ।

चरणकँवल की तहँ ल्यौ लागै। जतन जतन करि प्रीति बनाई ॥ १ ॥
जे रस भीना छाकरि जावै, सुन्दरि सहजैं संगि समाई।
अनहद बाजे बाजण लागे। जिभ्या हीणे कीरति गाई ॥ २ ॥
कहा कहौ कुछ बरणि न जाई, अबिगति अंतरि जोति जगाई।
दादू उन कौ मरम न जाणै, आप सुरंगे बेन बजाई ॥ ३ ॥

४८

अबधू कामधेनु गहि राखी।
बसि कीन्ही तब अमृत सरवै, आगैं चारि न नाखो ॥टेक॥
पोखंता पहली उठि गरजै, पीछैं हाथि न आवै।
भूखी भलैं दूध दूणाँ, यौं या धेन दुहावै ॥ १ ॥
ज्यौं ज्यौं षोण पड़े त्यौं दूझै, मुकती मेल्या मारै।
घटा रोकि घेरि घर आणौ, बाँधी कारज सारै ॥ २ ॥
सहजैं बाँधो कदै न छूटै, करम बंधन छुटि जाई।
काटै करम सहज सूँ बाँधै, सहजैं रहै समाई ॥ ३ ॥
छिन छिन माहिं मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनंदा।
दादू सोई देखताँ पावै, कलि अजरावर कंदा ॥ ४ ॥

४९

नीके राम कहत हैं बपुरा।
घर माहैं घर निर्मल राखै, पंचौं धोवै काया कपरा ॥ टेक ॥
सहज समरण सुमिरण सेवा, तिरबेणी तट संजम सपरा।
सुन्दरि सन्मुख जागण लागी, तहँ मोहन मेरा मन पकरा ॥ १ ॥
बिन रसना मोहन गुण गावै, नाना बाणी अनभै अपारा।
दादू अनहद ऐसैं कहिये, भगति नत्त यहु मारग सकरा ॥ २ ॥

५०

साहिब जी सति मेरा रे। लोक झखैं बहुतेरा रे॥ टेक॥
जीवन जनम जब पाया रे। मस्तक खेल खिलाया रे॥ १॥
घटै बधै कछु नाहीं रे। करम लिख्या उस माहीं रे॥ २॥
बिधाता बिधि कीन्हा रे। सिरजि सबन कौं दीन्हा रे॥ ३॥
सरम सिरजनहारा रे। सो तेरे निकट गँवारा रे॥ ४॥
सकल लोक फिरि आवै रे। तौ दादू दीया पावै रे॥ ५॥

५१

तूँ है तूँ है तूँ है तेरा, मैं नहिं मैं नहिं मैं नहिं मेरा॥ टेक॥
तूँ है तेरा जग उपायात, मैं मैं मेरा धंधै लाया॥ १॥
तूँ है तेरा खेल पसारा, मैं मैं मेरा कहै गँवारा॥ २॥
तूँ है तेरा सब संसारा, मैं मैं मेरा तिन सिर भारा॥ ३॥
तूँ है तेरा काल न खाई, मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ॥ ४॥
तूँ है तेरा रह्या समाइ, मैं मैं मेरा गया बिलाइ॥ ५॥
तूँ है तेरा तुमहीं माहीं, मैं मैं मेरा मैं कुछ नाहीं॥ ६॥
तूँ है तेरा तूँ हीं होइ, मैं मैं मेरा मिल्या न कोइ॥ ७॥
तूँ है तेरा लंघै पार, दादू पाया ज्ञान विचार॥ ८॥

५२

राम धन खात न खूटै रे।
अपरम्पार पार नहिं आवै, आथि न टुटै रे॥ टेक॥
तस्करि लेइ न पावक जालै, प्रेम न छूटै रे।
चहुँ दिसि हसस्यौ बिन रखवाले, चीर न लूटै रे॥ १॥
हरि हीरा है राम रसाइण, सरस न सूकै रे।
दादू और आथि बहुतेरी, तुस नर कूटै रे॥ २॥

५३

सब हम नारी एक भरतार। सब कोई तन करै सिंगार ॥ टेक ॥
घरि घरि अपणे सेज सँवारै। कंत पियारे पंथ निहारै ॥ १ ॥
आरति अपणे पिव कौं ध्यावै। मिलै नाह कब अंग लगावै ॥ २ ॥
अति आतुर ये खोजत डोलैं। बानि परी बियोगनि बोलैं ॥ ३ ॥
सब हम नारी दादू दीन। देइ सुहाग काहू सँग लीन ॥ ४ ॥

५४

अलह राम छूटा भ्रम मोरा।
हिन्दू तुरक भेद कुछ नाहीं, देखौं दरसन तोरा ॥ टेक ॥
सोई प्राण प्यंड पुनि सोई, सोई लोही मासा।
सोई नैन नासिका सोइ, सहजैं कीन्ह तमासा ॥ १ ॥
स्रवणौ सबद बाजता सुणिय, जिभ्या मीठा लागै।
सोई भूख सबन कूँ ब्यापै, एक जुगुति सोइ जागै ॥ २ ॥
सोई संध बंध पुनि सोई, सोई सुख सोई पीरा।
सोई हस्त पाँव पुनि सोई, सोई एक सरीरा ॥ ३ ॥
यह सब खेल खालिक हरि तेरा, तैं ही एक करि लीन्हा।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, तब यहु प्राणपतीना ॥ ४ ॥

५५

तब हम एक भये रे भाई। मोहन मिलि साची मति आई ॥ टेक ॥
पारस परसि भये सुखदाई। तब दुतिया दुरमति दूरि गमाई ॥ १ ॥
मलयागिरि मरम मिलि पाया। तब बंस बरण कुल भरम गँवाया ॥२॥
हरि जल नीर निकट जब आया। तब दादू एक रंगै रँग लाला ॥३॥

५६

भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पष रहित पंथ गहि पूरा, अबरण एक अधारा ॥ टेक ॥
वाद बिबाद काहू सौं नाहीं, माहिं जगत थैं न्यारा ।
समदृष्टी सुभाइ सहज में, आपहि आप बिचारा ॥ १ ॥
मैं न मेरी यहु मति नाहीं, निरबैरी निरबिकारा ।
पूरण सबै देखि आपा पर, निरालंभ निराधारा ॥ २ ॥
काहू के सँगि मोह न ममिता, संगी सिरजनहारा ।
मनहीं मन सूँ समझि सयाना, आनँद एक अपारा ॥ ३ ॥
काम कलपना कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा ।
इहि पंथ पहुँचि पार गहि दादू, सो तत सहजि सँभारा ॥ ४ ॥

५७

ऐसो खेल बन्यौ मेरी माई । कैसे कह्यौं कछु जन्यौ न जाई ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि जन अचिरज आई । राम चरण को भेद न पाई ॥ १ ॥
मंदर माहैं सुरति समाई । कोऊ है सो देहु दिखाई ॥ २ ॥
मनहिं विचार करौ ल्यौ लाई । दीवा समाना जोति कहाँ छिपाई ॥ ३ ॥
देह निरंतर सुन्नि ल्यौ लाई । तहँ कौण सूता रे भाई ॥ ४ ॥
दादू न जाणै ये चतुराई । सोइ गुर मेरा जिन सुधि पाई ॥ ५ ॥

५८

इत है नीर नहावन जोग । अनतहिं भर्म भूला रे लोग ॥ टेक ॥
तिहि तटि न्हाये निर्मल होई । बस्तु अगोचर लखे रे सोई ॥ १ ॥
सुघट घाट अरु तिरबौ तीर । बैठे तहाँ जगत गुर पीर ॥ २ ॥

दादू न जाणौ तिनका भेव आप लखावै अन्तरि देव ॥ ३ ॥

५९

गुरमुख पाइये रे, ऐसा ज्ञान विचार ।
समझि समझि समझया नहीं, लागा रंग अपार ॥ टेक ॥
जाणि जाणि जाण्या नहीं, ऐसी उपजै आइ ।
बूझि बूझि बूझया नहीं, दौरी लाग्या जाइ ॥ १ ॥
ले ले ले लीया नहीं, हौंस रही मन माहिं ।
राखि राखि राख्या नहीं, मैं रस पीया नाहिं ॥ २ ॥
पाइ पाइ पाया नहीं, तेजैं तेज समाइ ।
करि करि कुछ कीया नहीं, आतम अगि लगाइ ॥ ३ ॥
खेलि खेलि खेल्या नहीं, सन्मुख सिरजनहार ।
देखि देखि देख्या नहीं, दादू सेवग सार ॥ ४ ॥

६०

रमैया यहु दुख सालै मोहिं ।
सेज सुहागनि प्रीति प्रेम रस, दरसन नाहीं तोहि ॥ टेक ॥
अंग प्रसंग एक रस नाहीं, सदा समीप न पावै ।
ज्यों रस में रस बहुरि न निकसै, ऐसैं होइ न आवै ॥ १ ॥
आतम लीन नहीं निस बासुर, भगति अखंडित सेवा ।
सनमुष सदा परस्पर नाहीं, ता थैं दुख मोहिं देवा ॥ २ ॥
मगन गलित महा रस माता, तूँ है तब लग पीजै ।
दादू जब लग अंत न आवै, तब लग देखण दीजै ॥ ३ ॥

६१

मेरे मन लागा सकल करा, हम निस दिन हिरदै सो धरा ॥ टेक ॥
हम हिरदै माहैं हेरा, पिव परगट पाया नेरा ।
सो नेरे ही निज लीजै, तब सहज अमृत पीजै ॥ १ ॥

जब मन ही मूँ मन लागा, तब जोति सरूपो जागा ।
जब जोति सरूपो पाया, तब अंतर माहिं समाया ॥ २ ॥
जब चित्तहिं चित्त समाना, हम हरि बिन और न जाना ।
जाना जीवनि सोई, इब हरि बिन और न कोई ॥ ३ ॥
जब आतम एकै बासा, पर आतम माहिं प्रकासा ।
परकासा पीव पियारा, सो दादू मीत हमारा ॥ ४ ॥

६२

बाबा गुरमुख ज्ञाना रे, गुरमुख ध्याना रे ॥ टेक ॥
गुरमुख दाता गुरमुख राता, गुरमुख गवना रे ।
गुरमुख भवना गुरमुख छवना, गुरमुख रवना रे ॥ १ ॥
गुरमुख पूरा गुरमुख सूरा, गुरमुख बाणी रे ।
गुरमुख देणाँ गुरमुख लेणा, गुरमुख जाणी रे ॥ २ ॥
गुरमुख गहिबा, गुरमुख रहिबा, गुरमुख न्यारा रे ।
गुरमुख सारा गुरमुख तारा, गुरमुख पारा रे ॥ ३ ॥
गुरमुख राया गुरमुख पाया, गुरमुख मेला रे ।
गुरमुख तेजं, गुरमुखसेजं, दादू खेला रे ॥ ४ ॥

६३

मैं मेरे मैं हेरा, मधि माहैं पिव नेरा ॥ टेक ॥
जहँ अगम अनूप अवासा, तहँ महा पुरिष का बासा ।
तहँ जानैगा जन कोई, हरि माहिं समाना सोई ॥ १ ॥
अखंड जोति जहँ जागै, तहँ राम नाम ल्यौ लागै ।
तहँ राम रहै भरपूरा, हरि संगि रहै नहिं दूरा ॥ २ ॥
तिरबेणी तटि तीरा, तहँ अमर अमोलिक हीरा ।
उस हीरे सूँ मन लागा, तब भरम गया भौभागा ॥ ३ ॥

दादू देख हरि पावा, हरि संग सहजैं लखावा ।
पूरण परम निधाना, निज निरखत हौं भगवाना ॥ ४ ॥

६४

गोब्यंदे कैसैं तिरिये ।
नाव नाहीं खेव नाहीं, राम बिमुख मरिये ॥ टेक ॥
ज्ञान नाहीं ध्यान नाहीं, लैं समाधि नाहीं ।
बिरहा बैराग नाहीं, पाँचौं गुण माहीं ॥ १ ॥
प्रेम नाहीं प्रीति नाहीं, नाँउ नाहीं तेरा ।
भाव नाहीं भगति नाहीं, काइर जिव मेरा ॥ २ ॥
घाट नाहीं बाट नाहीं, कैसे पग धरिये ।
वार नाहीं पार नाहीं, दादू बहु डरिये ॥ ३ ॥

६५

दरबार तुम्हारे दरदवंद पिव पीव पुकारै ।
दीदार दरूनै दीजिये, सुनि खसम हमारे ॥ टेक ॥
तनहा कैतनि पोर है सुनि तुंहीं निबारै ।
करम करीमा कीजिये, मिलि पीव पियारे ॥ १ ॥
सूल सुलाकौं सौ सहूँ, तेग तन मारै ।
मिलि साईं सुख दीजिये, तूँहीं तुँ सँभारै ॥ २ ॥
मैं सुहदा तन सोखता, बिरहा दुख जारै ।
जिव तरसै दीदार कूँ, दादू न बिसारै ॥ ३ ॥

६६

पिव आव हमारे ।
मिलि प्राण पियारे रे, बलि जाउँ तुम्हारे रे ॥ टेक ॥

सुनि सखी सयानी रे, मैं सेव न जानी रे।
हौं भई दिवानी रे ॥ १ ॥
सुनि सखि सहेली रे, क्यौं रहूँ अकेली रे।
हौं सखी दुहेली रे ॥ २ ॥
हौं करूँ पुकारा रे, सुन सिरजनहारा रे ॥ ३ ॥

६७

बाला सेज हमारी रे, तूँ आव हौं वारी रे।
हौं दासी तुम्हारी रे ॥ टेक ॥
तेरा पंथ निहारूँ रे, सुन्दर सेज सँवारूँ रे।
जियरा तुम पर वारूँ रे ॥ १ ॥
तेरा अँगना पेखौं रे, तेरा मुखड़ा देखौं रे।
तब जीवन लेखौं रे ॥ २ ॥
मिलि सुखड़ा दीजै रे, यह लाहड़ा लीजै रे।
तुम देखैं जीजै रे ॥ ३ ॥
तेरे प्रेम की माती रे, तेरे रगड़े राती रे।
दादू वारणै जाती रे ॥ ४ ॥

६८

मुझ थैं कुछ न भया रे, यहु यूँ हीं गया रे, पछितावा रह्या रे ॥टेक॥
मैं सीस न दीया रे भरि प्रेम न पीया रे, मैं क्या कीया रे ॥ १ ॥
हौं रंग न राता रे, रस प्रेम न माता रे, नहिं गलित गाता रे ॥२॥
मैं पीव न पाया रे, किया मन का भाया रे, कुछ होइ न आया रे ॥३॥
हौं रहौं उदासा रे, मुझ तेरी आसा रे, कहे दादूदासा रे ॥४॥

६९

दादूदास पुकारै रे, सिर काल तुम्हारे रे, सर साँधे मारै रे ॥टेक॥
जम काल निवारी रे, मन मनसा मारी रे, यहु जनम न हारी रे ॥१॥
सुख नींद न सोई रे, अपणा दुख रोई रे, मन मूल न खोई रे ॥२॥
सिरि भार न लीजी रे, जिसका तिस कूँ दीजी रे।
इब ढील न कीजी रे ॥ ३ ॥
यहु औसर तेरा रे, पंथी जागि सवेरा रे, सब बाट बसेरा रे ॥ ४ ॥
सब तरवर छाया रे, धन जोबन माया रे,
यहु काची काया रे ॥ ५ ॥
इस भरम न भूलो रे, बाजी देखि न फूलो रे,
सुख सागर झूली रे ॥ ६ ॥
रस अमृत पीजो रे, बिष का नाँउ न लीजी रे,
कह्या सो कीजो रे ॥ ७ ॥
सब आतम जाणी रे, अपणा पीव पिछाणी रे,
यह दादू बाणी रे ॥ ८ ॥

७०

मेरा मेरा छाडि गँवारा, सिर पर तेरे सिरजनहारा।
अपने जीव विचारत नाहीं, क्या ले गइला बंस तुम्हारा ॥ टेक ॥
तब मेरा कत करता नाहीं, आवत है हँकारा।
काल चक्र सौं खरी परी रे, बिसरि गया घर बारा ॥ १ ॥
जाइ तहाँ का संयम कीजै, बिकट पंथ गिरधारा।
दादू रे तन अपना नाहीं, तौ कैसैं भया संसारा ॥ २ ॥

७१

भाई रे यूँ विनसै संसारा, काम क्रोध अहंकारा ॥टेका॥
लोभ मोह मैं मेरा, मद मंछर बहुतेरा ॥१॥

प्रापा पार अभिमाना, केता गरब गुमाना ॥२॥
तीन तिमिर नहिं जाहीं, पंचौ के गुण माहीं ॥३॥
आतम राम न जाना, दादू जगत दिवाना ॥४॥

७२

बदे हाजिराँ हजूर वे, अलह आले नूर वे।
आशिकाँ रह सिदक़ स्याबत, तालिबाँ भरपूर वे ॥ टेक ॥
औजूद में मौजूद है, पाक परवरदिगार वे।
देखले दीदार कूँ, गैब गोता मारि वें ॥ १ ॥
मौजूद मालिक तख्त खालिक, आशिक़ाँ रह ऐन वे।
गुज़र कर दिल मग़ाज़ भीतर, अजब है यहु सैन वे ॥२॥
अर्श ऊपर आप बैठा, दोस्त दाना यार वे।
हुशियार हाजिर चुस्त करदम, मीराँ मिहरवान वे।
देखिले दरहाल दादू, आप है दीवान वे ॥ ४ ॥

७३

मन मेरे कछु भी चेत गँवार।
पीछे फिर पछितावैगा रे, आवै न दूजी बार ॥टेक॥
काहे रे मन भूलो फिरत है, काया सोच बिचार।
जिन पंथूँ चलना तुझ कूँ, सोई पंथ सँवारि ॥ १ ॥
आगैं बाट जु बिषम है मन रे, जैसी खाँडे की धार।
दादू दास तूँ साईं सौं सूत करि, कूड़ काम निवार ॥ २ ॥

७४

आव सलोने देखन दे रे।
बलि बलि जाउँ बलिहारी तेरे ॥टेक॥

आव पिया तूँ सेज हमारी, निसदिन देखौं बाट तुम्हारी ॥ १ ॥
सब गुण तेरे औगुण मेरे, पीव हमारी आहि न ले रे ॥२॥
सब गुणवंता साहिब मेरा, लाड गहेला दादू केरा ॥३॥

७५

आव वे सजणाँ आव, सिर पर धरि पाँव,
जानीं मैंडा जिंद असाडे ।
तूँ रावौं दा राव वे सजणाँ आव ॥टेक॥
इस्थाँ उत्थाँ जित्थाँ कित्याँ, हौं जीवाँ तो नाल वे,
मीयाँ मैंडा आव असाडे ।
तूँ लालों सिर लाल वे सजणाँ आव ॥१॥
तन भी डेवाँ मन भी डेवाँ, प्यंड पराण वे ।
सच्चा साँई मिलि इथाँई ।
जिन्द कराँ कुरबाण वे सजणाँ आव ॥२॥
तूँ पाकौं सिर पाक वे सजणाँ तूँ खूबौं सिर खूब
दादू भावै सजणाँ आवै ।
तूँ मीठा महबूब वे सजणाँ ॥३॥

७६

मनमति हीन धरै मूरखि मन ।
कुछ समझत नाहीं ऐसैं जाइ जरै ॥ टेक ॥
नाँव बिसारि और चित राखै, कूड़े काज करै ।
सेवा हरि की मनहुँ न आनै, मूरखि बहुरि मरै ॥ १ ॥
नाँव संगम करि लीजै प्राणी, जम थैं कहा डरै ।
दादू रे जे राम सँभालै, सागर तीर तिरै ॥ २ ॥

७७

काहू तेरा मरम न जाना रे, सब भये दीवाना रे ॥ टेक ।
माया के रस राते माते, जगत भुलाना रे ।
को काकाहू कह्या न माने, भये अयाना रे ॥ १ ॥
माया मोहे मुदित मगन, खानखानाँ रे ।
बिषिया रस अरस परस, साच ठाना रे ॥ २ ॥
आदि अंत जीव जंत, किया पयाना रे ।
दादू सब भरम भूले, देखि दाना रे ॥ ३ ॥

७८

पीव तें अपने काज सँवारे ।
कोई दुष्ट दीन कौं मारण, सोई गहि तें मारे ॥ टेक ॥
मेर समान ताप तप व्यापै, सहजैं ही सो टारे ।
संतन कौं सुखदाई माधौ, बिन पावक फँध जारे ॥ १ ॥
तुम थैं होइ सबै बिधि समरथ, आगम सबै बिचारे ।
संत उबारि दुष्ट दुख दीन्हा, अंध कूप में डारे ॥ २ ॥
ऐसा है सिर खसम हमारे, तुम जीते खल हारे ।
दादू सौं ऐसैं निर्बहिये, प्रेम प्रीतम पिव प्यारे ॥ ३ ॥

७९

ऐन एक सो मीठा लागै, जोति सरूपी ठाढ़ा आगै ॥ टेक ॥
झिलिमिलि करणा अजरा जरणा, नीझर झरणा तहँ मन धरणा ॥१॥
निज निरधारं निर्मल सारं, तेज अपारं प्राण अधारं ॥२॥
अगहा गहणाँ अकहा कहणाँ, अलहा लहणाँ तहाँ मिलि रहणाँ ॥३॥
निरसँध नूरं सकल भरपूरं सदा हजूरं दादू सूरं ॥ ४ ॥

८०

नौ काहे की परवाह हमारे, राते माते नाँव तुम्हारे ॥ टेक ॥
झिलिमिलि झिलिमिलि तेज तुम्हारा, परगट खेलै प्राण हमारा ॥ १ ॥
नूर तुम्हारा नैनौं माहीं, तन मन लागा छूटै नाहीं ॥ २ ॥
सुख का सागर वार न पारा, अमी मदी रस पीवण हारा ॥ ३ ॥
प्रेम मगन मतवाला माता, रंगि तुम्हारे जन दादू राता ॥ ४ ॥

८१

भाई रे ऐसा सतगुर कहिये । भगति मुकति फल लहिये ॥टेक॥
अबिचल अमर अबिनासी । अठ सिधि नौ निधिदासी ॥१॥
ऐसा सतगुर राया । चारि पदारथ पाया ॥२॥
अमी महा रस माता । अमर अभै पद दाता ॥३॥
सतगुर त्रिभुवन तारै । दादू पार उतारै ॥४॥

८२

मारा नाथ जी, तारो नाम लेवाड़ रे ।
राम रतन हृदया मों राखे ।
मारा वाहला जी, विषया थी वारे ॥टेक॥
वाहला वाणी ने मन माहें मारे ।
चितवन तारो चित्त राखे ।
स्रवण नेत्र आ इन्द्री ना गुण ।
मारा माहेला मल ते नाखे ॥१॥
वाहला जीवाड़े तो राम रमाड़े ।
मनें जीव्याँ तो राम रमाड़े ।
तारा नाम बिना हूँ ज्याँ ज्याँ बंध्यो ।
जन दादू ना बंधन कापे ॥२॥

८३

अरे मेरा अमर उपावणहार रे ।
खालिक आसिक तेरा ॥टेक॥
तुम सौं राता तुस सौ माता ।
तुम सौं लागा रङ्ग रे खालिक ॥१॥
तुम सौं लेणा तुम सौं देणा, तुम सौं रत होइ रे खालिक ॥२॥
खालिक मेरा आसिक तेरा, दादू अनत न जाइ रे खालिक ॥३॥

८४

अरे मेरा समरथ साहिब रे अल्ला, नूर तुम्हारा ॥टेक॥
सब दिसि देवै सब सब दिसि लेवै ।
सब दिसि वार न पार रे अल्ला ॥१॥
सब दिसि बक्ता सब दिसि सुरता ।
सब दिसि देखणहार रे अल्ला ॥२॥
सब दिसि करता सब दिसि हरता ।
सब दिसि तारणहार रे अल्ला ॥३॥

८५

अरे मेरा सदा सँगाती रे राम, कारण तेरे ॥टेक॥
कंथा पहरू भसम लगाऊँ, बैरागिन ह्वै ढूँढूँ रे राम ॥१॥
गिरवर बासा रहूँ उदासा, चढ़ि सिर मेर पुकारूँ रे राम ॥२॥
यहु तन जालूँ यहु मन गालूँ, करवत सीस चढ़ाऊँ रे राम ॥३॥
सीस उतारूँ तुम पर वारूँ, दादू बलि बलि जाइ रे राम ॥४॥

८६

पीव जी सेतीं नेह नबेली, अति मीठा मोहिं भावै रे ।
निसि दिन देखौं बाट तुम्हारी, कब मेरे घरि आवै रे ॥टेक॥

आइ बणी है साहिब सेतीं, तिस बिन तिल क्यौं जावै रे।
दासी कौं दरसन हरिदीजै, अब क्यों आप छिपावै रे॥ १॥
तिल तिल देखौं साहिब मेरा, त्यौं त्यौं आनँद अंगि न मावै रे।
दादू ऊपरि दया करी, कब नैनहुं नैन मिलावै रे॥२॥

८७

हालु असाँ जो लाल रे, तोखे सब मावूम रे॥टेक॥
मंझें खामाँ मंझें बराँ अला, मंझें लागी बारि रे।
मंझें मूँ रे मचु थियो अला, करि दरि करियाँ दाह रे॥ १॥
बिरह कसाई मूँ घरि अला, मंझें बरे बाहि रे।
सीखूँ करे कबाब जियं अला, इयँ दादू जे हियावँ रे॥ २॥

८८

निर्मल तत निर्मल तत, निर्मल तत ऐसा।
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा॥ टेक॥
उनपति आकार नाहीं, जीव नाहीं काया।
काल नाहीं कर्म नाहीं, रहिता राम राया॥ १॥
सीत नाहीं घाम नाहीं धूप नाहीं छाया॥
बाव नाहीं बरन नाहीं, मोह नाहीं, माया॥२॥
धरणी आकास अगम, चंद सूर नाहीं।
रजनी निस दिवस नाहीं, पवन नहिं जाहीं॥३॥
बंदे हाज़िराँ हजूर वे, अलह आले नूर वे।
किरमत घट कला याहीं, सकल रहित सोई।
दादू निज अगम निगम, दूजा नाहिं कोई॥ ४॥

८९

पीव घरे आवै रे, बेदन मारी जाणी रे।
बिरह सँताप कोण पर कीजै, कहूँ छूँ दुख नी कहाणी रे॥ टेक॥
अंतरजामी नाथ मारो, तुज बिण हूँ सीदाणी रे।

मंदिर मारे केम न आवै, रजनी जाइ बिहाणी रे ॥ १ ॥
तारी बाट हूँ जोइ थाकी, नेण निखूट्या पाणी रे ।
दादू तुज बिण दीन दुखी रे, तूँ साथी रह्यो छे ताणी रे ॥ २ ॥

९०

कब मिलसी पीव गृह छाती, हूँ औराँ संग मिलाती ॥ टेक ॥
तिसज लागी तिसही केरी, जनम जनम नो साथी ।
मीत हमारा आव पियारा, तराहरा रँग नी राती ॥ १ ॥
पीव बिना मने नींद न आवे, गुण ताहरा लै गाती ।
दादू ऊपर दया मया करि, ताहरे वारणें जाती ॥ २ ॥
तलफि मरौं कै झूरि मरौं रे, कै हौं बिहरी रोइ मरौं रे ।
टेरि कह्या मैं मरण गह्या रे, दादू दुखिया दीन भया रे ॥ ३ ॥

९१

हमारे तुमहीं हौ रखपाल ।
तुम बिन और नहीं कीइ मेरे, भौ दुख मेटणहार ॥ टेक ॥
बैरी पंच निमष नहिं न्यारे, रोकि रहे जम काल ।
हा जगकीस दास दुख पावै, स्वामी करो सँभाल ॥ १ ॥
तुम बिन राम दहैं ये दुंदर, दसौं दिसा सब साल ।
देखत दीन दुखि क्यों कीजे, तुम हौ दीनदयाल ॥ २ ॥
निर्भय नाँव हेत हरि दीजे, दरसन परसन लाल ।
ददू के तुम सजन सहाई, कछु न बसाइ हमारा ॥ ३ ॥

९२

हाँ हमारे जियरा राम गुण गाइ, येही बचन बिचारी मानि ।
कहि समझाऊँ बेर बेर, तुझ अजहुँ न आवै ज्ञान ॥ १ ॥
ऐसा सँग कहँ पाइये, गुण गावत आवै तान ।

चरनौं सौं सौं चित राखिये, निस दिन हरि कौन ध्यान ॥ २ ॥
वै भी लेखा देहिगे, आप कहावौं खान ।
जन दादू रे गुण गाइये, पूरण है निरवाण ॥ ३ ॥

९३

जात कत मद कौ मातौ रे ।
तन धन जोबन देखि गरबानौ, माया रातौ रे ॥टेक॥
अपनौ हीं रूप नैन भरि देखै, कामिन कौ सँग भावै रे ।
बारंबार बिषै रत मानै, मरिबौ चीति न आवै रे ॥ १ ॥
मैं बड़ आगैं और न आवै, करत केत अभिमाना रे ।
मेरी मेरी करि करि भूल्यौ, माया मोह भुलाना रे ॥ २ ॥
मैं मैं करत जनम सब खोयो, काल सिरहानै आयौ रे ।
दादू देखु मूढ़ नर प्राणी, हरि बिन जनम गमायौ रे ॥ ३ ॥

९४

बटाऊ रे चलना आजि कि काल्हि ।
समझि न देखै कहा सुख सोवै, रे मन राम सँभालि ॥टेक॥
जैसैं तरवर बिरष बसेरा, पंखी बैठे आइ ।
ऐसैं यहु सब हाट पसारा, आप आप कौं जाइ ॥ १ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती, जिनि खोवै मन मूल ।
यहु संसार देखि जिनि भूलै, सबही सेवल फूल ॥ २ ॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा, कहा रह्यो इहिं लागि ।
दादू हरि बिन क्यों सुख सोवै, काहे न देखै जागि ॥ ३ ॥

९५

जागत कौं कदे न मूसै कोई ।
जागत जानि जतन करि राखै, चोर न लागू होई ॥टेक॥

सोवत साह वस्तु नहिं पावै, चोर मुसै घर घेरा ।
आसि पासि पहरो कोउ नाहीं, बस्तैं कीन्ह निबेरा ॥ १ ॥
पीछैं कहु क्या जागें होई, वस्तु हाथ थैं जाई ।
बीती रैनि बहुरि नहिं आवै, तब क्या करिहै भाई ॥ २ ॥
पहिलै हीं पहरैं जे जागै, बस्तु कछू नहिं छीजै ।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, करना है सो कीजै ॥ ३ ॥

९६

कोई जानै रे मरम मभइया केरौ ।
कैसैं रहै करै का सजनी प्राण मेरौ ॥टेक॥
कौण बिनोद करत री सजनी, कौणनि संग बसेरौ ।
संत साध गति आये उनके, करत जु प्रेम घनेरौ ॥ १ ॥
कहाँ निवास बास कहँ, सजनी गवन तेरौ ।
घट घट माहैं रहै निरंतर, ये दादू नेरौ ॥ २ ॥

९७

सजनी रजनी घटती जाइ ।
पल पल छीजै अवधि दिन आवै, अपनो लाल मनाइ ॥टेक॥
अति गति नींद कहा सुख सोवै, यहु अवसर चलि जाइ ।
यहु तन बिछुरें बहुरि कहँ पावै, पीछैं ही पछिताइ ॥ १॥
प्राणपति जागै सुंदरि क्यौं सोवै, उठि आतुर गहि पाँइ ।
कोमल बचन करुणा करि आगैं, नख सिख रहु लपटाइ ॥ २ ॥
सखी सुहाग सेज सुख पावै, प्रीतम प्रेम बढ़ाइ ।
दादू भाग बड़े पिव पावै, सकल सिरोमणि राइ ॥ ३ ॥

९८

मन बैरागी राम कौ, संगि रहे सुख होइ हो ॥टेक।
हरि कारण मन जोगिया, क्योंही मिलै मुझ सोइ हो ।
निरखण का मोहिं चाव है, क्योंही आप दिखावे मोहिं हो ।१।
हिरदै में हरि आव तूँ, मुख देखौं मन धोइ हो ।

तन मन में तूँहीं बसै, दया न आवै तोहि हो ॥२॥
निरखण का मोहिं चाव है, ये दुख मेरा खोइ हो।
दादू तुम्हारा दास है, नैन देखन कौं रोइ हो ॥ ३।

९९

सिरजनहार थैं सब होइ।
उतपति परलै करै आपै, दूसर नाहीं कोइ ॥टेक॥
आप होइ कुलाल करता, बूँद थैं सब लोइ।
आप करि अगोच बैठा, दुनी मन कौं मोहि ॥१॥
आप थैं उपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ।
बाजींगर कौं यहु भेद आवै, सहजि सौंज समोइ ॥२॥
जे कुछ किया सु करै आपै, येह उपजै मोहि।
दादू रे हरि नाँव सेती, मैल कुसमल धोइ ॥३॥

१००

माहरा रे वाहला ने काजे, रिदै जोवा ने हूँ ध्यान धरूँ।
आकुल थाये प्राण माहरा, कोने कहो पर करूँ ॥ टेक ॥
सँभास्यो आवै रे वाहला, वेहला ए हौं जोइ ठरूँ।
साथी जो साथै थइनि, पेली तीरे पार तरूँ ॥ १ ॥
पीव पाखे दिन दुहेला जाये, घड़ी बरसाँ सौं केम भरूँ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ, पूरण स्वामी ते बरू ॥ २ ॥

१०१

मरिये मीत बिछोहे, जियरा जाइ अँदोहे ॥ टेक ॥
ज्यौं जल बिछरैं माना, तलफि तलफि जिव दीन्हा।
यौं हरि हम सौं कीन्हा ॥ १ ॥
चात्रिग मेरे पियासा, निस दिन रहै उदासा।

खीर नीर ज्यौं मिलि रहै, जल जलहि समान।
आतम पाणी लूण ज्यौं, दूजा नहिं आन ॥३॥
मैं जन सेवग द्वै नहीं, मेरा बिसराम।
मेरा जन मुक सारिखा, दादू कहै राम ॥४॥

१०७

गोबिन्द राखौं अपनी ओट।
काम किरोध भये बटपारे, तकि मारैं उर चोट ॥टेक॥
बैरी पंच सबल सँगि मेरे, मारग रोकि रहे।
काल अहेंड़ी बधिक ह्वै लागे, ज्यूँ जिव बाज गहे ॥१॥
ज्ञान ध्यान हिरदे हरि लीना, सँग ही घेरि रहे।
समझि न परई बाप रमइया, तुम बिन सूल सहे ॥२॥
सरणि तुम्हारी राखौ गोबिंद, इनका संग न दीजै।
इन के संग बहुत दुख पायो, दादू कौ गहि लीजै ॥३॥

१०८

राम कृपा करि होहु दयाला, दरसन देहु करी प्रतिपाला ॥टेक॥
बालक दूध न देई माता, तौ वै क्यूँ करि जिवै बिधाता ॥१॥
गुण औगुण हरि कुछ न बिचारै, अंतरि हेत प्रीति करि पालै ॥२॥
अपनौ जानि करै प्रतिपाला, नैन निकट उर धरै गोपाला ॥३॥
दादू कहै नहीं बस मेरा, तू माता मैं बालक तेरा ॥४॥

१०९

हरि नाम देहु निरंजन तेरा, हरि हरखि जपै जिव मेरा ॥टेक॥
भाव भगति हेत हरि दीजै, प्रेम उमँग मन आवै।
कोमल बचन दीनता दीजै, राम रसायण भावै ॥ १ ॥

बिरह बैराग प्रीति मोहिं दीजै, हिरदै साच सति भाखौ ।
चित चरणौं चिंतामणि दीजै, अंतरि दिढ़ करि राखौ ॥ २ ॥
सहज संतोष सील सब दीजै, मन निहचल तुम लागै ।
चेतनि चिंतनि सदा निवासी, संगि सुम्हारे जागै ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान मोहन मोहिं दीजै, सुरति सदा सँगि तेरे ।
दीन दयाल दादू कूँ दीजै, परम जोति घटि मेरे ॥ ४ ॥

११०

हरि के चरण पकरि मन मेरा, यहु अबिनासी घर तेरा ॥टेक॥
जब चरण कवल रज पावै, तब काल ब्याल बौरावै ।
तब त्रिबिधि ताप तन नासै, तब सुख की रासि बिलासै ॥ १ ॥
जब चरण कवल चित लागै, तब माथैं मीच न जागै ।
तब जनम जुरा स ब खीना, तब पद पाण उर लीना ॥ २ ॥
जब चरण कवल रस पीवै, तब माया न ब्यापै जीवै ।
तब भरम करम भौ भाजै, तब तीनो लोक बिराजै ।
जब चरण कमल रूचि तेरी तब चारी पदारथ चेरी ।
तब दादू और न बाँछै, जब मन लागै साचै ॥ ४ ॥

१११

मन रे बहुरि न ऐसैं होई ।
पीछैं फिर पछितावैगा रे, नींद भरे जिनि सोई । टेक॥
आगम सारै संचु करीले, तौ सुख होवै तोही ।
प्रीति करी पिव पाइये, चरणौं राखै मोही ॥ १ ॥
संसार सागर बिषम अति भारी, जिन राखै मन मोहि ।
दादू रे जन राम नाम सौं, कुसमल देही धोइ ॥ २ ॥

११२

दादू मोहिं भरोसा मोटा ।
तारण तिरण सोई सँग मेरे, कहा करै कलि खोटा ॥ टेक ॥
दौं लागी दरिया थैं न्यारी, दरिया मंझि न जाई ।
मच्छ कच्छ रहैं जल जेते, तिन कूँ काल न खाई ॥ १ ॥
जब सूवै प्यंजर घर पाया, बाज रह्या बन माहीं ।
जिन का समरथ राखणहारा, तिनकूँ को डर नाहीं ॥ २ ॥
साचै झूठ न पूजै कबहूँ, सत्ति न लागै काई ।
दादू साचा सहजि समाना, फिरि वै झूठ बिलाई ॥ ३ ॥

११३

तुम सरसी रङ्ग रमाड़ि, आप अपरछन थई करी ।
मूनैं मा भरमाड़ि ॥ टेक ॥
मूनैं भोलवे काँइ थइ बेगलो, आपणपौ दिखाड़ि ।
केम जीवौं हूँ एकली, बिरहणिया नारि ॥ १ ॥
मूँ ने बाहिस मा अलगौ थई, आतमा उधारि ।
दादू सौं रमिये सदा, ये णे परैं तारि ॥ २ ॥

११४

जागि रे सब रैणि विहाणी, जाइ जनम अँजुली कौ पाणी ॥ टेक ॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै, जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥१॥
सूरज चंद कहैं समझाइ, दिन दिन आव घटती जाइ ॥ २ ॥
सरवर पाणी तरवर छाया, निस दिन काल गरासै काया ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना, दादू आतम राम न जाना ॥ ४ ॥

११५

आदि काल अंति काल, मधि काल भाई।
जनम काल जुहा काल, काल सँग सदाई ॥ टेक ॥
जागत काल सोवत काल, काल झंपै आई।
काल चलत काल फिरत, कबहूँ ले जाई ॥ १ ॥
आवत काल जात काल, काल कठिन खाई।
लेत काल देत काल काल, ग्रसे धाई ॥ २ ॥
कहत काल सुनत काल, करत काल सगाई।
काम काल क्रोध काल, काल जाल छाई ॥ ३ ॥
काल आगैं काल पीछैं, काल सँगि समाई।
काल रहित राम गहित, दादू ल्यौ लाई ॥ ४ ॥

११६

मन बावरे हो अनत जिनि जाइ।
तौ तूँ जीवै अमी रस पीवै- अमर फल काहे न खाइ ॥ टेक ॥
रहु चरण सरण सुख पावै, देखहु नैन अघाइ।
भाग तेरे पीव नेरे, थीर थान बताइ ॥ १ ॥
संग तेरे रहै घेरे- सहजैं अंग समाइ।
सरीर माहैं सोधि साईं, अनहद ध्यान लगाइ ॥ २ ॥
पीव पासि आवै सुख पावै, तन की तपति बुझाइ।
दादू रे जहँ नाद ऊपजै, पीव पीव पासि दिखाइ ॥ ३ ॥

११७

गावहु मंगलचार, आज वधावणा ये।
सुपनौ दर्ख्यौ साच, पीव घरि आवणा ये ॥ टेक ॥
भाव कलस जल प्रेम का, सब सखियन के सीस।

गावत चलीं वधावणा, जै जै जै जगदीस ॥ १ ॥
पदम कोटि रबि झिलमिलै अँगि अँगि तेज अनंत ।
बिगसि बदन बिरहनि मिली, घरि आये हरि कंत ॥ २ ॥
सुँदर सुरति सिंगार करि, सरमुख परसे पीव ।
मो मंदिर मोहन आविया, वारूँ तन मन जीव ॥ ३ ॥
कवल निरंतर नरहरी, प्रगट भये भगवंत ।
जहँ बिरहिन गुण बीनवै, खेलै फाग बसंत ॥ ४ ॥
बर आयौ बिरहनि मिली, अरस परस सब अंग ।
दादू सुँदरि सुख भया, जुगि जुगि यहु रस रंग ॥ ५ ॥

११८

सदगति साधवा रे, सन्मुख सिरजनहार ।
भौजल आप तिरैं ते तारैं, प्राण उधारणहार ॥ टेक ॥
पूरण ब्रह्म राम रँग राते, निर्मल नाँव अधार ।
सुख संतोष सदा सत संजम, मति गति वार न पार ॥ १ ॥
जुगि जुगि राते जुगि जुति माते, जुगि जुगि संगति सार ।
जुगि जुगि मेला जुगि जुगि जीवन, जुगि जुगि ज्ञान बिचार ॥२॥
सकल सिरोमणि सब 'सुखदाता, दुर्लभ इहि संसार ।
दादू हंस रहैं सुखसागर, आये पर उपगार ॥ ३ ॥

११९

जग अंधा नैन न सूझै, जिन सिरजे ताहि न बूझै ॥ टेक ॥
पाहण की पूजा करै, करि आतम घाता ।
निरमल नैन न आवई, दोजग दिसि जाता ॥ १ ॥
पूजै देव दिहाड़िया, महामाई मानै ।
परगट देव निरंजना, ता की सेव न जानै ॥ २ ॥

भैरौं भूत सब भरम के, पसु प्राणी ध्यावै ।
सिरजन हारा सबनि का, ता कूँ नहिं पावै ॥ ३ ॥
आप सुवारथ मेदिनी, का का नाहिं करई ।
दादू साचे राम बिन, मरि मरि दुख भरई ॥ ४ ॥

१२०

मैं पंथि एक अपार के, मन और न भावै ।
सोई पंथि पावै पीव का, जिस आप लखावै ॥ टेक ॥
को पंथि हिंदू तुरक के, को काहू राता ।
को पंथि सोफी सेवड़े, को सन्यासी माता ॥ १ ॥
को पंथि जोगी जंगमा, को सक्ति पंथि धावै ।
को पंथि कमड़े कापड़ी, को बहुत मनावै ॥ २ ॥
को पंथि काहू के चलै, मैं और न जानौं ॥ ।
दादू जिन जग सिरजिया, ताही कौं मानौं ॥ ३ ॥

१२१

चलु रे मन जहँ अमृत बनाँ । निरमल नीके संत जनाँ ॥ टेक ॥
निरगुण नाँव फल अगम अपार । संतन जीवनि प्राण-अधार ॥ १ ॥
सीतल छाया सुखी सरीर । चरण सरोवर निरमल नीर ॥ २ ॥
सुफल सदा फल बारह मास । नाना बाणी धुनि परकास ॥ ३ ॥
जहाँ बास बसि अमर अनेक । तहँ चलि दादू इहै बिबेक ॥ ४ ॥

१२२

संतो राम बाण मोहिं लागे ।
मारत मिरग मरम तब पायौ, सब संगी मिलि जागे ॥ टेक ॥
चित चेतनि चयंतामणि चीन्हे, उलटि अपूटा आया ।

मंदिर पैसि बहुरि नहिं निकसै, परम तत्त घर पाया ॥ १ ॥
आवै न जाइ जाइ नहिं आवै, तिहि रसि मनवाँ माता ।
पान करत परमानँद पायौ, थकित भयौ चलि जाता ॥ २ ॥
भयौ अपंग पंक नहिं लागै, निरमल संगि सहाई ।
पूरण ब्रह्म अखिल अबिनासी, तिहि तजि अनत न जाई ॥ ३ ॥
सो सर लागि प्रेम परकासा, प्रगटी प्रीतम बाणी ।
दादू दीनदयालहि जाणै, सुख में सुरती समाणी ॥ ४ ॥

१२३

जोगी जानि जानि जन जीवै ।
बिनहीं मनसा मनहिं बिचारै, बिन रसना रस पीवै ॥ टेक ॥
बिनहीं लोचन निरखि नैन बिन, स्रवण रहित सुनि सोई ।
ऐसैं आतम रहै एक रस, तौ दूसर नाँव न होई ॥ १ ॥
बिनहीं मारग चलै चरण बिन, निहचल बैठा जाई ।
बिनहीं काया मिलै परस्पर, ज्यौं जल जलहि समाई ॥ २ ॥
बिनहीं ठाहर आसण पूरै, बिन कर बेनु बजावै ।
बिनहीं पाँऊँ नाचै निस दिन, बिन जिभ्या गुण गावै ॥ ३ ॥
सब गुण रहिता सकल बियापी, बिन इंद्री रस भोगी ।
दादू ऐसा गुरू हमारा, आप निरंजन जोगी ॥ ४ ॥

१२४

इहै परम गुर जोगं, अमी महा रस भोगं ॥ टेक ॥
मन पवना थिर साधं, अविगत नाथ अराधं ।
तहँ सबद अनाहद नादं ॥ १ ॥
पंच सखी परमोधं, अगम ज्ञान गुर बोधं ।
तहँ नाथ निरंजन सोधं ॥ २ ॥

सतगुर माहिं बतावा, निराधार घर छावा ।
तह जोति सरूपी पावा ॥ ३ ॥
सहजैं सदा प्रकासं, पूरण ब्रह्म बिलासं ।
तहँ सेवग दादू दासं ॥ ४ ॥

१२५

पीव घरि आवनौं ये, अहो मोहि भावनौं ते ॥टेक॥
मोहन नीकौ री हरी, देखौंगी अँखिया भरी ।
राखौं हौं उर घरी प्रीति खरी, मोहन मेरौ री माई ।
रहौं हौं चरणौं धाई, आनँद बधाई, हरि के गुण गाई ॥१॥
दादू रे चरण गहिये, जाइ नैं तिहाँ तौ रहिये ।
तन मन सुख लहिये, बीनती कहिये ॥२॥

१२६

अहा माई मेरौ राम बैरागी, तजि जिनि जाइ ॥टेक॥
राम बिनोद करत उर अंतरि, मिलिहौं बैरागनि धाइ ॥१॥
जोगनि ह्वै करि फिरौंगी बिदेसा, राम नाम ल्यौ लाइ ॥२॥
दादू को स्वामी है रे उदासी, रहिहौं नैन दोइ लाइ ॥३॥

१२७

साईं बिना संतोष न पावै, भावै घर तजि बन बन धावै ॥टेक॥
भावै पढ़ि गुनि वेद उचारै, आगम नीगम सबै बिचारै ॥१॥
भावै नव खँड सब फिरि आवै, अजहूँ आगै काहे न जावै ॥२॥
भावै सब तजि रहै अकेला, भाई बंध न काहू मेला ॥ ३ ॥
दादू देखै साँईं सोई, साच बिना संतोष न होई ॥ ४ ॥

१२८

मन माया रातौ भूले ।
मेरी मेरी करि करि बौरे, कहा मुगध नर फूले ॥ टेक ॥
माया कारणि मूल गँवावै, समझि देखि मन मेरा ।
अंत काल जब आइ पहूँता, कोई नहीं तब तेरा ॥ १ ॥
मेरी मेरी करि नर जाणै, मन मेरी करि रहिया ।
तब यहु मेरी कामि न आवै, प्राण पुरिस जब गहिया ॥ २ ॥
राव रंक सब राजा राणा, सबहिन कौं बौरावै ।
छत्रपति भूपति तिनहूँ के सँगि, चलती बेर न आवै ॥ ३ ॥
चेति बिचारि जानि जिय अपने, माया संगि न जाई ।
दादू हरि भज समझि सयाना, रहो राम ल्यौ लाई ॥ ४ ॥

१२९

रे मन मरणे कहा डराई, आगैं पीछैं मरण रे भाई ॥ टेक ॥
जे कुछ आवै थिर न रहाई, देखत सबै चल्या जग जाई ॥ १ ॥
पीर पैगम्बर किया पयाना, सेख मुसाइख सबै समाना ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस महाबलि, मोटे मनि जन गये सबै चलि ॥ ३ ॥
निहचल सदा सोई मन लाइ, दादू हरखि राम गुण गाइ ॥ ४ ॥

१३०

ऐसा तत्त अनूपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई ॥ टेक ॥
पावकि जरै न माऱ्यौ मरई, काटऱ्यौ कटै न टाऱ्यो टरई ॥ १ ॥
आखिर खिरै नहिँ लागै काई, सीत घाम जल डूबि न जाई ॥ २ ॥
माटी मिलै न गगन बिलाई, अघट एक रस रह्या समाई ॥ ३ ॥
ऐसा तत्त अनूपम कहिये, सो गहि दादू काहे न रहिये ॥ ४ ॥

१३१

निरंजन जोगी जानि ले चेला, सकल बियापी रहै अकेला ॥ टेक ॥
खपर न झोली डंड अधारी, मठी न माया लेहु बिचारी ॥ १ ॥
सींगी मुद्रा बिभूति न कंथा, जटा जाप आसण नहिं पंथा ॥ २ ॥
तीरथ बरत न बनखँड बासा, माँगि न खाइ नहीं जग आसा ॥ ३ ॥
अमर गुरू अबिनासी जोगी, दादू चेला महारस भोगी ॥ ४ ॥

१३२

जोगिया बैरागी बाबा, रहै अकेला उनमनि लागा ॥ टेक ॥
आतमा जोगी धीरज कंथा, निहचल आसण आगम पंथा ॥ १ ॥
सहजैं मुद्रा अलख अधारी, अनहद सींगी रहणि हमारी ॥ २ ॥
काया बनखँड पाँचौं चेला, ज्ञान गुफा में रहै अकेला ॥ ३ ॥
दादू दरसन कारनि जागै, निरंजन नगरी भिष्या माँगै ॥ ४ ॥

१३३

मद के माते समझत नाहीं, मैगल की मति आई ।
आपै आप आप दुख दीन्हा, देखि आपणी झाँई ॥ ३ ॥
मन समझै तौ दूजा नाहीं, बिन समझें दुख पवै ।
दादू ज्ञान गुरु का नाहीं, समझि कहाँ थैं आवै ॥ ४ ॥

१३४

बाबा नाहीं दूजा कोई,
एक अनेक नाँउ तुम्हारे मो पै और न होई ॥ टेक ॥
अलख इलाही एक तूँ, तूँहीं राम रहीम ।
तूँहीं मालिक मोहना, केसो नाँउ करीम ॥ १ ॥

१४०

अबिनासी सँगि आतमा, रमै हो रैणि दिन राम ।
एक निरंतर ते भजै, हरि हरि प्राणी नाम ॥ टेक ॥
सदा अखंडित पुरि बसै, सो मन जाणी ले ।
सकल निरंतर पूरि सब, आतम रातौ ते ॥ १ ॥
निराधार निज बैसणौ, जिहि तति आसण पूरि ।
गुर सिष आनँद ऊपजै, सनमुख सदा हजूरि ॥ २ ॥
निहचल ते चालै नहीं, प्राणी ते परिमाण ।
साथी साथैं ते रहैं, जाणैं जाण सुजाण ॥ ३ ॥
ते निरगुण आगुण धरी, माहैं कौतिगहार ।
देह अछत अलगौ रहै, दादू सेवि अपार ॥ ४ ॥

१४१

रे मन साथी माहरा, तूँ समझायो इक बारो रे ।
रातौ रंग कसुंभ कै, तैं बीसाऱ्यो आधारो रे ॥ टेक ॥
सुपिना सुख के कारणे, फिर पीछैं दुख होई रे ।
दीपक दृष्टि पतंग ज्यूँ, यूँ भर्मि जलै जिन कोई रे ॥ १ ॥
जिभ्या स्वारथि आपणे, ज्यूँ मीन मरै तजि नीरो रे ।
माहैं जाल न जाणियौ, ता थैं उपनो दुक्ख सरीरो रे ॥ २ ॥
स्वादैं ही संकुटि पऱ्यौ देख हीं नर अंधो रे ।
मूरिख मूठी छाड़ि दे, होइ रहो निरबंधी रे ॥ ३ ॥
मानि सिखावणि माहरी, तूँ हरि भज मूल न हारी रे ।
सुख सागर सोई सेविये, जन दादू राम सँभारी रे ॥ ४ ॥

१४२

बौरी तूँ बार बार बौरानी ।
सखी सुहाग न पावै ऐसैं, कैसैं भरमि भुलानी ॥ टेक ॥
चरनौं चेरी चित नहिं राख्यो, पतिबत नाहिन जान्यो ।
सुंदर सेज संगि नहि जाने, पिव सूँ मन नहिं मान्यौ ॥ १ ॥
तन मन सबै सरीर न सौंप्यौ, सीस नाइ नहिं ठाढ़ी ।
इकरस प्रीति रही नहिं कबहूँ, प्रेम उमँग नहिं बाढ़ी ॥ २ ॥
प्रीतम अपनौ परम सनेही, नैन निरखि न अघानी ।
निसबासुर आनि उर अंतर, परम पूजि नहिं जानी ॥ ३ ॥
पतिब्रत आगैं जिनि जिन पाल्यो, सुंदरि तिनि सब छाजै ।
दादू पिव बिन और न जानै, ताहि सुहाग बिराजै ॥ ४ ॥

१४३

नूर रह्या भरपूर, अमी रस पीजिये ।
रस माहैं रस हीइ, लाहा लीजिये ॥ टेक ॥
परगट तेज अनंत, पार नहिं पाइये ।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ, तहाँ मन लाइये ॥ १ ॥
सहजैं सदा प्रकास, जोति जल पूरिया ।
तहाँ रहै निजदास, सेवग सूरिया ॥ २ ॥
सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है ।
हंस रहैं ता माहिं, दादू दास है ॥ ३ ॥

१४४

साधौ हरि सौं हेत हमारा, जिन यहु कीन्ह पसारा ॥ टेक ॥
जा कारण व्रत कीजै, तिल तिल यहु तन छीजै ।
सहजैं ही सो जाना, हरि जानत ही मन माना ॥ १ ॥
जा कारण तप जइये, धूप सीत सिर सहिये ।
सहजैं ही सो आवा हरि आवत ही सचु पावा ॥ २ ॥
जा कारण बहु फिरिये, करि तीरथ भ्रमि भ्रमि मरिये ।
सहजैं ही सो चीन्हा, हरि चीन्हि सबै सुख लीन्हा ॥ ३ ॥
प्रेम भगति जिन जानी, सो काहे भरमै प्रानी ।
हरि सहज ही भल मानै, ता थैं दादू और न जानै ॥ ४ ॥

१४५

हो ऐसा ज्ञान ध्यान, गुर बिना क्यौं पांवै ।
वार पार पार वार, दूतर तिरि आवै हो ॥ टेक ॥
भवन गवन गवन भवन, मनहीं मन लावै ।
रवन छवन छवन रवन, सतगुर समझावै हो ॥ १ ॥
खीर नीर नीर खीर, प्रेम भगति भावै ।
प्राण कँवल बिगसि बिगसि, गोबिंद गुण गावै हो ॥ २ ॥
जोति जुगति बाट घाट, लै समाधि धावै ।
परम नूर परम तेज, दादू दिखलावै हो ॥ ३ ॥

१४६

रामजी जिनि भरमावै हम कौं ।
ता थैं करौं बीनती तुम्ह कौं ॥ टेक ॥
चरण तुम्हारे सबही देखौं, तप तीरथ व्रत दाना ।
गंग जमुन पासि पाँइन के, तहाँ देहु अस्नाना ॥ १ ॥

संग तुम्हारे सबही लागे, जोग जग्गि जे कीजै ।
साधन सकल येई सब मेरे, संग आपणों दीजै ॥ २ ॥
पूजा पाती देवी देवल, सब देखौं तुम माहीं ।
मा कौं ओट अपणी दीजै, चरण कँवल की छाहीं ॥ ३ ॥
ये अरदास दास की सुणिये, दूरि करौ भ्रम मेरा ।
दादू तुम्ह बिन और न जाणै, राखौ चरनौं नेरा ॥ ४ ॥

१४७

इहि बिधि बेध्यौ मोर मन, ज्यूँ लै भृंगी कीट तना ॥ टेक ॥
चौत्रिग रटतं रैनि बिहाइ, प्यंड करै पै बानि न जाइ ॥ १ ॥
मरै मीन बिसरै नहिं पानी, प्राण तजे उन और न जानी ॥ २ ॥
जलै सरीर न मोड़ै अंगा, जोति न जोति न छाड़ै पड़ै पतंगा ॥ ३ ॥
दादू इव थैं एम्हैं होइ, प्यंड परै नहिं छाड़ौं तोहि ॥ ४ ॥

१४८

समरथ मेरा साँइयाँ, सकल अघ जारै ।
सुखदाता मेरे प्राण का, संकोच निवारै ॥ टेक ॥
त्रिबिधि ताप तन की हरै, चौथे जन राखै ।
आप समागम सेवगा, साधू यूँ भाखै ॥ १ ॥
आप करै प्रतिपालना, दारुन दुख टारै ।
इच्छा जन की पूरवै, सबै कारिज सारै ॥ २ ॥
करम कोटि भय भंजना, सुख-मंडन सोई ।
मन मनोरथ पूरण, ऐसा और न कोई ॥ ३ ॥
ऐसा और न देखिहौं, सब पूरण कामा ।
दादू साध संगी किये, उन्ह आतम रामा ॥ ४ ॥

१४९

मेर सिखर चढ़ि बोलि मन मोरा ।
राम जल बरिखै सबद सुनि तोरा ॥ टेक ॥
आरति आतुर पीव पुकारै ।
सोवत जागत पंथ निहारै ॥ १ ॥
निस बासुरि कहि अमृत बाणी ।
राम नाम ल्यौ लाइ लै प्राणी ॥ २ ॥
टेरि मन भाई जब लग जीवै ।
प्रीति करि गाढ़ी प्रेम रस पीवै ॥ ३ ॥
दादू औसरि जे जन जागै ।
राम घटा जल बरिखन लागै ॥ ४ ॥

१५०

तू राखै त्यूँ ही रहै, तेई जन तैरा ।
तुम बिन और न जानही, सो सेवग तेरा ॥ टेक ॥
अंबर अपैंही धरया, अजहूँ उपगारी ।
धरती धारी आप थैं, सबही सुखकारी ॥ १ ॥
पवन पासि सब के चलै, जैसैं तुम कीन्हा ।
पानी परगट देखिहौं, सब सौं रहै भीना ॥ २ ॥
चंद चिराकी चहुँ दिसा, सब सीतल जानै ।
सूरज भी सेवा करै, जैसैं भल मानै ॥ ३ ॥
ये निज सेवग तेरड़े सब आज्ञाकारी ।
मो कौं ऐसैं कीजिये, दादू वलिहारी ॥ ४ ॥

१५१

चरण देखाड़ तो परमाण ।
स्वामी म्हारै नैणौं निरखूं, माँगू येज मान ॥ टेक ॥

जोबूँ तुझ नें आसा मुझ नें, लागूँ येज ध्यान ।
वाल्हो म्हारो मला रे रहियं, आवे केवल ज्ञान ॥ १ ॥
जेणी पेरें हूँ देखूँ तुझ नें, मुझ में आलौ जाण ।
पीप तणीं हूँ पर नहिं जाणूँ दादू रे अजाण ॥ २ ॥

१५२

सिरजनहार थैं सब होइ ।
उनपति परलै करै आपै, दूसर नाहीं कोइ ॥ टेक ॥
आप होइ कुलाल करता, बूँद थैं सब लोइ ।
आप करि अगोच वैठा, दुनी मन कौं मोहि ॥ १ ॥
आप थैं ऊपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ ।
बाजीगर कौं यहु भेद आघै, सहजि सौंज समोइ ॥ २ ॥
जे कुछ किया सु करै आपै, येह उपजै मोहि ।
दादू रे हरि नाँव सेती, मैल कुसमल धोइ ॥ ३ ॥

१५३

तौ निबहै जन सेबग तेरा, ऐसैं दया करि साहिब मेरा ॥ टेक ॥
ज्यूँ हम तोरैं त्यूँ तूं जोरै, हम तोरैं पै तूँ नहिं तोरै ॥ १ ॥
हम विसरैं पै तुँ न बिसारै, हम बगरैं पै तू न बिगारै ॥ २ ॥
हम भूलैं तूँ आनि मिलावै, हम बिछुरैं तूँ अंगि लगावै ॥ ३ ॥
तुम भावै सो हम पै नाहीं, दादू दरसन देहु गुसाईं ॥ ४ ॥

१५४

माया संसार की सब झूठी ।
माता पिता सब ऊभे भाई, तिनहिं देखताँलू टी ॥ टेक ॥

जब लग जीव काया में था रे, खिण बैठी खिण ऊठी ।
हंस जु था सो खेलि गया रे, तब थैं संगति छूटी ॥ १ ॥
ये दिन पूगे आव घटानी, तब निचयंत होइ सुती ।
दादूदास कहै ऐसि काया, जैसि गगरिया फूटी ॥ २ ॥

१५५

चल चल रे मन तहाँ जाइये ।
चरण बिन चलिबौ, स्रवण बिन सुनिबौ,
बिन कर बैन बजाइये ॥ टेक ॥
तन नाहीं जहँ, मन नाहीं तहें प्राण नहीं तहँ आइये ।
सबद नहीं जहँ, जीव नहीं तहँ, बिन रसना मुख गाइये ॥ १ ॥
पवन पावक नहीं धरणि अंबर नहीं, उभै नहीं तह लाइये ।
चंद नहीं जहँ, सूर नहीं तहँ, परम जोति सुख पाइये ॥ २ ॥
तेज पुँज सो सुख का सागर, झिलिमिलि नूर नहाइये ।
तहँ चलि दादू अगम अगोचर, ता में सहज समाइये ॥ ३ ॥

१५६

राइ रे राइ रे सकल भुवनपति राइ रे,
अमृत देहु अघाइ रे राइ ॥ टेक ॥
परगट राता परगट माता,
परगट नूर दिखाइ रे राइ ॥ १ ॥
इस्थिर ज्ञाना इस्थिर ध्याना,
इस्थिर तेज मिलाहू रे राहू ॥ २ ॥
अबिचल मेला अबिचल खेला,
अबिचल जोति समाई रे राइ ॥ ३ ॥
निहचल बैना निहचल नैना,
दादू बलि बलि जाइ रे राइ ॥ ४ ॥

१५७

कहौ क्यौं जन जीवै साँइयाँ, दे चरण कँवल आधार हो।
डूबत है भौसागरा, करो क़रौ करतार हो ॥टेक॥
मींन मरै बिन पाणियाँ, तुम बिन येह बिचार हो।
जल बिन कैसैं जीवहीं, इब तौ किती इक बार हो ॥ १ ॥
ज्यौं परै पतंगा जोति माँ, देखि देखि निज सार हो।
प्यासा बूँद न पावई, तब बनि बनि करै पुकार हो ॥ २ ॥
निस दिन पीर पुकारही, तन की ताप निवारि हो।
दादू विपति सुनावही, करि लोचन सनमुख चारि हो ॥ ३ ॥

१५८

कछु चेति रे कहि क्या आया।
इन में बैठा फूलि करि, तैं देखी माया ॥टेक॥
तूँ जिनि जानै तन धन मेरा, मूरिख देख भुलाया।
आज कालि चलि जावै देही, ऐसी सुन्दर काया ॥१॥
राम नाम निज लीजिये, मैं कहि समझाया।
दादू हरि की सेवा कीजै, सुन्दर साज मिलाया ॥२॥

१५९

जाइ रे तन जाइ रे, जनम सुफल करि लेहु राम रमि।
सुमिरि सुमिरि गुन गाई रे ॥टेक॥
नर नारायण सकल सिरोमणि, जनम अमोलिक आहि रे।
सो तन जाइ जगत नहिं जानै, सकहि त ठाहर लाइ रे ॥१॥
जुरा काल दिन जाइ गरासै, ता सौं कुछ न बसाइ रे।
छिनछिन छीजत जाइ मुगध नर, अंत काल दिन आइ रे ॥२॥
प्रेम भगति साध की संगति, नाँव निरंतर गाइ रे।
जे सिरि भागतौ सौंज सुफल करि, दादू बिलंब न लाइ रे ॥३॥

१६०

माधइयौ माधइयौ मीठौ री माइ ।
माहवौ माहवौ भेटियौ आइ ॥ टेक ॥
कान्हइयौ कान्हइयौ करताँ जाइ ।
केसवौ केसवौ केसवौ धाइ ॥ १ ॥
भूधरौ भूधरौ भूधरौ भाइ ।
रामइयौ रामइयौ रह्यौ समाइ ॥ २ ॥
नरहरि नरहरि नरहरि राइ ।
गविंदौ गोविंदौ दादू गाइ ॥ ३ ॥

१६१

आदि है आदि आनादि मेरा ।
संसार सागर भगति भेरा ।
आदि है अंति है अंति है आदि है आदि है, बिड़द तेरा ॥ टेक ॥
काल है झाल है झाल है काल है ।
राखि ले राखि ले प्राण घेरा ॥
जीव का जनम का, जनम का जीव का ।
आपही आप ले भानि फेरा ॥ १ ॥
भर्म का कर्म का कर्म का भर्म का ।
आइबा जाइबा मेटि फेरा ॥
तारिले पारिले पारिले तारिले ।
जीव सौं सीव है निकटि नेरा ॥ २ ॥
आतमा राम है, राम है आतमा ।
जोति है जुगति सौं करौ मेला ॥
तेज है सेज है, सेज है तेज है ।
एक रस दादू खेल खेला ॥ ३ ॥

१६२

हुसियार हाकिम न्याव है, साईं के दीवान ।
कुल का हसेब होइगा, समझि मूसलमान ।।टेक।।
नीयत नेकी सालिहाँ, रास्ताँ ईमान ।
इखलास अंदर आपणै, रखणा सुबहान ।। १ ।।
हुक्म हाजिर होइ बाबा, मुसलम मिहरबान ।। २ ।।
कह सौं हजूरी होणा, देखणा करि ज्ञान ।
दोस्त दाना दीन का, मनना फुरमान ।। ३ ।।
गुस्सा हैवानी दूरि कर, छाड़ि दे अभिमान ।
दुई दरोगाँ नाहिं खुसियाँ, दादूलेहु पिछान ।। ४ ।।

१६३

हम पाया हम पाया रे भाई ।
भेष बनाइ ऐसी मनि आई ।।टेक।।
भीतर का यहु भेद न जानै ।
कहै सुहागनि क्यूँ मन मानै ।। १ ।।
अंतर पीव सौं परचा नाहीं ।
भई सुहागिन लोगन माहीं ।। २ ।।
सांईं सुपिनै कबहुँ न आवै ।
कहिबा ऐसैं महल बुलावै ।। ३ ।।
इन बातन मोहिं अचिरज आवै ।
पटम कियें पिव कैसैं पावै ।।४।।
दादू सुहागनि ऐसैं कोई ।
आपा मेटि राम रत होई ।। ५ ।।

१६४

अखिल भाव अखिल भगति, अखिल नाँव देवा ।
अखिल प्रेम अखिल प्रीति, अखिल सुरति सेवा ॥ टेक ॥
अखिल अंग अखिल संग, अखिल रंग रामा ।
अखिला रत अखिला मत, अखिला निज नामा ॥ १ ॥
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान, अखिल आनँद कीजै ।
अखिला लय अखिला मय, अखिला रस पीजै ॥ २ ॥
अखिल मगन अखिल मुदित, अखिल गलित साँई ।
अखिल दरस अखिल परम, दादू तुम माहीं ॥ ३ ॥

१६५

तूँ घरि आव सुलच्छन पीव ।
हिक तिल मुख दिखलावहु तेरा, क्या तरसावै जीव ॥ टेक ॥
निस दिन तेरा पंथ निहारौं तूँ घरि मेरे आव ।
हिरदा भीतरि हेत सौं रे वाल्हा, तेरा मुख दिखलाव ॥ १ ॥
वारी फेरी बलि गई रे, सोभित सोई कपोल ।
दादू ऊपर दया करीनै, सुनाइ सुहावे बोल ॥ २ ॥

१६६

ता कौं काहे न प्राण सँभालै ।
कोटि अपराध कलप के लागे, माहिं महूरत टालै ॥ टेक ॥
अनेक जनम के बंधन बाढ़े, बिन पावक फँध जालै ।
ऐसो है मन नाँव हरी कौ, कबहूँ दुक्ख न सालै ॥ १ ॥
च्यंतामणि जुगति सौं राखै, ज्यूँ जननी सुत पालै ।
दादू देखु दया करै ऐसी, जन कौं जाल नरालै ॥ २ ॥

१६७

बरहणी बपु न सँभारै ।
निस दिन तलफै राम के कारण, अंतरि एक बिचारै ॥टेक॥
आतुर भई मिलन के कारण, कहि कहि राम पुकारै ।
सास उसास निमिख नहिं बिसरै, जित तित पंथ निहारै ॥१॥
फिरै उदास चहूँ दिसि चितवत, नैन नीर भरि आवै ।
राम बियोग बिरह की जारी, और न कोई भावै ॥२॥
व्याकुल भई शरीर न समझै, बिषम बाण हरि मारै ।
दादू दरसन बिन क्यूँ जीवै, राम सनेही हमारे ॥३॥

१६८

मन रे राम राम रटत क्यूँ रहिरे, यहु तत बार बार क्यूँ न कहिये ।टेक।
जब लग जिभ्या बाणी, तौ लौं जपिले सारँग-पाणीं ।
जब पवा चलि जावै, तब प्राणी पछितावै ॥ १ ॥
जब लग स्रवण सुणी जै, तौ लौं साध सबद सुणि लीजै ।
स्रवणौं सुरति जब जाई, तब का सुणि है भाई ॥२॥
जब लग नैनहुँ देखै, तौ लौं चरन कँवल क्यूँ त देखै ।
जब नैनहुँ कछू न सूझै, ये तब मूरिख क्यां बूझै ॥ ३ ॥
जब लग तन मन नौका, तौ लौं जपि ले जवनि जी का ।
जब दादू जिव आवै, तब हरि के मनि भावै ॥ ४ ॥

१६९

मन रे अंतिकाल दिन आया, ताथैं यहु सब भया पराया ॥ टेक ॥
स्रवनौं सुनै न नैनौं सूझै, रसना कह्या न जाई ।
सीस चरण कर कंपन लागे, सो दिन पहुँच्या आई ॥ १ ॥

काले धौले बरन पलटिया, तन मन का बल भागा ।
जोबन गया जुरा चलि आई, तब पछितावन लागा ॥ २ ॥
आव घटै घटि छीजै काया, यहु तन भया पुराना ।
पाँचौं थाके काह्या न मानैं, ता का मरम न जाना ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना, समझि देखि मन माहीं ।
दिन दिन काल गरासै जियरा, दादू चेतै नाहीं ॥ ४ ॥

१७०

भाई रे बाजीगर नट खेला, ऐसैं आपै रहै अकेला ॥ टेक ॥
यहु बाजी खेल पसार, सब मोहे कौतिगहारा ।
यहु बाजी खेल दिखावा, बाजीगर किनहुँ न पावा ॥ १ ॥
इहि बाजी जगत भुलाना, बाजीगर किनहुँ न जाना ।
कुछ नाहीं सो पेखा, है सो किनहुँ न देखा ॥ २ ॥
कुछ ऐसा चेटक कीन्हा, तन मन सब हरि लीन्हा ।
बाजीगर भुरकी बाही, काहू पै लखी न जाई ॥ ३ ॥
बाजीगर परकासा, यहु बाजी झूठ तमासा ।
दादू पावा सोई, जो इहि बाजी लिपत न होई ॥ ४ ॥

१७१

निरंजन क्यूँ रहै, मोनि गह बैराग, केते जुग गये ॥टेक ॥
जागै जगपति राइ, हँसि बोलै नहीं ।
परगट घूँघट माहिं, पट खोलै नहीं ॥ १ ॥
सदिकै करौं संसार, सब जग वारणे ।
छाड़ौं सब परिवार तेरे कारणे ॥ २ ॥
वारौं प्यंड पराण, पाऊँ सिर धरूँ ।
ज्यूँ ज्यूँ भावै राम, सो सेवा करूँ ॥ ३ ॥

दीनानाथ दयाल, विलँब न कीजिये ।
दादू बलि बलि जाइ, सेज सुख दीजिये। । ४ ।।

१७२

आज प्रभाति मिले हरि लाल ।
दिल की बिथा पीड़ सब भागी, मिट्यौ जीव कौ साल ।।टेक।।
देखत नैन संतोष भयो है, इहै तुम्हारौ ख्याल ।
दादू जन सौं हिलि मिलि रहिबौ, तुम्ह हौ दीनदयाल ।।१।।
आसण रमिदा रामदा, हरि इथा अविगध आप वे ।
काया कासी वंजणा, हरि इथैं पूजा जाप वे ।।टेक।।

१७३

आसण रमिदा, रामदा हरि इथाँ अविगत आप वे ।
काया कासी वंजणा हरि इथैं पूजा जाप वे ।
महादेव मुनिदेव ते, सिधौंदा बिसराम वे ।
सर्ग सुखासण हुलणे, हरि इथैं आतमराम वे ।।१।।
अमी सरोवर आतमा, इथाउं आधार वे ।
अमर थान अविगति रहै हरि इथै सिरजनहार वे ।।२।।
सब कुछ इथै आव वे इथाँ परमानंद वे ।
दादू आपा दूरि करि, हरि इथाँईं आनंद वे ।।३।।

१७४

साचा सतगुर राम मिलावै ।
सब कुछ काया माहिं दिखावै ।।टेक।।
काया माहैं सिरजनहार, काया माहैं ओंकार ।।१।।
काया माहैं है आकास, काया माहैं धरती पास ।।२।।
काया माहैं पवन प्रकास, काया माहैं नीर निवास ।।३।।

काया माहैं ससिहर सूर, काया माहैं बाजै तूर ॥४॥
काया माहैं तीन्यूँ देव, काया माहैं अलख अभेद ॥५॥
काया माहैं चाऱ्यूँ वेद, काया माहैं पाया भेद ॥६॥
काया माहैं चाऱ्यूँ खाणी, काया माहैं चाऱ्यूँ बाणी ॥७॥
काया माहैं उपजै आइ, काया माहैं मरि मरि जाय ॥८॥
काया माहैं जामै मरै , काया माहैं चौरासी फिरै ॥९॥
काया माहैं ले अवतार, काया माहैं बारम्बार ॥१०॥
काया माहैं राति दिन, उदै अस्त इकतार ।
दादू पाया परम गुर, कीया एकंकार ॥११॥
काया माहैं खेल पसारा, काया माहैं प्राण अधारा ॥१२॥
काया माहैं अठारह भारा, काया माहैं उपाहणहारा ॥१३॥
काया माहैं सब बनराइ, काया माहैं रहै घर छाइ ॥१४॥
काया माहैं कंदलि वास, काया माहैं है कविलास ॥१५॥
काया माहैं तरवर छाया, काया माहैं पंखी माया ॥१६॥
काया माहैं आदि अनन्त, काया माहैं है भगवन्त ॥१७॥
काया माहैं त्रिभुवन राइ, काया माहैं रह्या समाइ ॥१८॥
काया माहैं सरग पयाल, काया माहैं आप दयाल ॥१९॥
काया माहैं चौदह भवन, काया माहैं आवागवन ॥२०॥
काया माहैं सब ब्रह्मंड, काया माहैं है नौखंड ॥२१॥
काया माहैं लोक सब, दादू दिये दिखाइ ।
मनसा बाचा कर्मना, गुर बिन लख्यान जाइ ॥२२॥

१७५

मेरे तुमहीं राखणहार, दूजा को नहीं ।
ये चंचल चहुँ दिसि जाइ, काल तहीं तहीं ॥ टैक ॥
मैं केते किये उपाइ, निहचल ना रहै ।
जहँ बरजौं तहँ जाइ, मदमातौ बहै ॥ १ ॥

जहँ जाणै तहँ जाइ, तुम थैं ना डरै ।
तास्यौं कहा बसाइ, भवै त्यौं करै ॥ २ ॥
सकल पुकारैं साध, मैं केता कह्या ।
गुर अंकुस मानै नाहिं, निरभै ह्वै रह्या ॥ ३ ॥
तुम बिन और न कोइ, इस मन को गहै ।
तूँ राखै राखणहार, दादू तौ रहै ॥ ४ ॥

१७६

इन कामनि घर घाले रे ।
प्रीति लगाइ प्राण सब सोखै, बिन पावक जिय जालै रे ॥ टेक ॥
अंगि लगाइ सार सब लेवै, इन थैं कोई न बाचै रे ।
यहु संसार जीति सब लीया, मिलन न देई साचै रे ॥ १ ॥
हेत लगाइ सबै धन लेवै, बाकी कछू न राखै रे
माखण माहिं सोधि सब लेवै, छाछ छिया करि नाखै रे ॥ २ ॥
जे जन जानि जुगति सौं त्यागै, तिन कौं निज पद परसै रे ।
काल न खाइ मरै नहिं कबहूँ, दादू तिन कौं दरसै रे ॥ ३ ॥

१७७

जिनि सत छाड़ौ बावरे, पूरिक है पूरा ।
सिरजे की सब चिंत है, देबे कौं सूरा ॥ टेक ॥
गर्भ बास जिन राखिया, पावक थैं न्यारा ।
जुगति जतन करि सींचिया, दे प्राण अधारा ॥ १॥
कुंज कहाँ धरि संचरै, तहँ को रखवारा ।
हेम हरत जिन राखिया, सो खसम हमारा ॥ २ ॥
जल थल जीव जिते रहैं, सो सब कौं पूरै ।
संपट सिला में देत है, काहे नर झूरै ॥ ३ ॥

जिन यहु भार उठाइया, निरबाहै सोइ ।
दादू छिन न बिसारिये, ता थैं जीवन होई ॥ ४ ॥

१७८

जब मैं रहते की रह जानी ।
काल काया के निकटि न आवै, पावत है सुख प्राणी ॥ टेक ॥
सोग संताप नैन नहिं देखौं, राग दोष नहिं आवै ।
जागत है जा सौं रुचि मेरी, सुपिनैं सोई दिखावै ॥ १ ॥
भरम करम मोह नहिं ममता, बाद बिबाद न जानौं ।
मोहन सौं मेरी बनि आई, रसना सोई बखानौं ॥ २ ॥
निस बासुर मोहन तन मेरे, चरन कँवल मन मानौ ।
सोई निधि निरखि देखि सचु पाऊँ, दादू और न जानै ॥ ३ ॥

१७९

राम मिल्या यूँ जानिये, जो काल न व्यापै ।
जुरा मरण ता कौं नहीं, अरु मेटै आपै ॥ टेक ॥
सुख दुख कबहूँ न उपजै, अरु सब जग सूझै ।
करम को बाँधै नहीं, सब आगम बूझै ॥ १ ॥
जागत ह्वै सो जन रहै, अरु जुगि जुगि जागै ।
अंतरजामी सौं रहै, कुछ काइ न लागै ॥ २ ॥
काम दहै सहजैं रहै, अरु सुन्न बिचारै ।
दादू सो सब की लहै, अरु कबहुँ न हारै ॥ ३ ॥

१८०

जियरा राम भजन करि लीजै ।
साहिब लेखा मांगैगा रे, ऊतर कैसैं दीजै ॥ टेक ॥

आगैं जाइ पछितावन लागौ, पल यहु तन छीजै ।
ताथैं जिय समझाइ कहूँ रे, सुकिरत अब थैं कीजै ॥ १ ॥
राम जपत जम काल न लागै, संगि रहै जन जीजै ।
दादू दास भजन करि लीजै, हरिजी की रासि रमीजै ॥ २ ॥

१८१

अल्लह आसिकाँ ईमान ।
भिस्त दोजख दीन दुनिया, चिकारे रहमान ।टेक॥
मीर मीरी पीर पीरी, फिरिस्ताँ फुरमान ।
आब आतिस अरस कुर्सी, दीदनी दीवान ॥१॥
हर दो आलम खलक खाना, मोमियाँ इसलाम ।
हजा हाजी कजा काजी, खान तू सुलतान ॥२॥
इल्म आलिम मुल्क मालुम, हाजते हैरान ।
अजब यारा खबरदाराँ, सूरते सुहवान ॥३॥
अवल आखिर एक तूँही, जिंद है कुरबान ।
आसिकाँ दीदार दादू, नूर का नीसान ॥४॥

१८२

साजनिया नेह न तोरी रे ।
जो हम तोरैं महा अपराधी, तौ तूँ जोरी रे ।।टेक॥
प्रेम बिना रस फीका लागै, मीठा मधुर न होई ।
सकल सिरोमणि सब थैं नीका, कड़वा लागै सोई ॥१॥
जब लगि प्रीति प्रेम रस नाहीं, त्रिषा बिना जल ऐसा ।
सब थैं सुंदर एक अमीरस, होइ हलाहल जैसा ॥२॥
सुंदरि साँईं खरा पियारा, नेह नवा नित होवै ।
दादू मेरा तब मन मानै, सेज सदा सुख सोवै ॥१॥

१८३

मनसा मन सबद सुरति, पंचौं थिर कीजै ।
एक अंग सदा संग, सहजैं रस पीजै ॥ टेक ॥
सकल रहित मूल गहित, आपा नहिं जानै ।
अंतरगति निर्मल रति, एकै मन मानै ॥ १ ॥
हृदय सुद्धि बिमल बुद्धि, पूरण परकासै ।
रसना निज नाँउ निरखि, अंतरगति बासै । २ ॥
आतम मति पूरण गति, प्रेम भगति राता ।
मगन गलित अरस परस, दादू रस माता ॥ ३ ॥

१८४

राम तूँ मोरा हूँ तोरा, पाँइन परत निहोरा ॥टेक॥
एकै संगैं बासा, तुम ठाकुर हम दासा ॥१॥
तन मन तुम कौं देबा, तेज पुंज हम लेबा ॥२॥
रस माहैं रस होइबा, जोति सरूपी जोइबा ॥३॥
ब्रह्म जीव का मेला, दादू नूर अकेला ॥४॥

१८५

मेरे जिय की जाणैं जाणराइ, तुम थैं सेवग कहा दुराइ ॥टेक॥
जल बिन जैसैं जाइ जियतलफत, तुमबिन तैसैं हमहुँ बिहाइ ।
तन मन ब्याकुल होइ बिरहनी, दरस पीयासी प्रान जाइ ॥ १ ॥
जैसैं चित्त चकोर चंदमनि, ऐसैं मोहन हमहि आहि ।
बिरह अगिनि दहत दाद कौं, दर्सन परसन तन सिराइ ॥ २ ॥

१८६

तहँ खेलौं नितहीं पिव सूँफाग, देखि सखी री मेरे भाग ॥ टेक ॥
तहँ दिन दिन अति आनंद होइ, प्रेम पिलावै आप सोइ ।
सँगियन सेती रमौं रास, तहँ पूजा अरचा चरन पास ॥ १ ॥
तहँ बचन अमोलिक सबहिं सार, तहँ बरतै लीला अति अपार ।
उमँगि देइ तब मेरे भाग, तिहि तरवर फल अमर लाग ॥ २ ॥
अलख देव कोई जाणै भेव, तहँ अलख देव की कीजै सेव ।
दादू बलि बलि बारबार, तहँ आप निरंजन निराधार ॥ ३ ॥

१८७

तन हीं राम मन हीं राम, राम रिदै रमि राखी ले ॥ टेक ॥
मनसा राम सकल परिपूरण, सहज सदा रस चाखी ले ।
नैना राम बैना राम, रसना राम सँभारी ले ।
श्रवणाँ राम सन्मुख राम, रमिता राम विचारी ले ॥ १ ॥
साँसै राम सुरतै राम, सबदै राम समाई ले ।
अंतरि राम निरंतरि राम, आतम राम ध्याई ले ॥ २ ॥
सबैं राम संगै राम, राम नाम ल्यौ लाई ले ।
बाहरि राम भीतरि राम, दादू गोबिंद गाई ले ॥ ३ ॥

१८८

का जाणौं राम को गति मेरी ।
मैं बिषयी मनसा नहि फेरी ॥ टेक ॥
जे मन माँगै सोई दीन्हा ।
जाता देखि फेरि नहिं लीन्हा ॥ १ ॥

देवा दुंदर अधिक पसारे ।
पंचौं पकरि पटकि नहिं मारे ॥ २ ॥
इन बातनि घट भरे बिकारा ।
तृष्णा तेज मोह नहिं हारा ॥ ३ ॥
इनहिं लागि मैं सेव न जाणी ।
कहे दादू सो कर्म कहाणी ॥ ४ ॥

१८९

डरिये रे डरिये, ता थैं राम नाम चित धरिये ॥ टेक ॥
जिन ये पंच पसारे रे, मारे रे ते मारे रे ॥ १ ॥
जिन ये पंच समेटे रे, भेटे रे ते भेटे रे ॥ २ ॥
कच्छिप ज्यूँ करि लीये रे, जीये रे ते जीये रे ॥ ३ ॥
भृंगी कीट समाना रे, ध्याना रे यहु ध्याना रे ॥ ४ ॥
आज्या सिंह ज्यूँ रहिये रे, दादू दरसन लहिये रे ॥ ५ ॥

१९०

कागा रे करंक परि बोलै ।
खाइ माँस अरु लगहीं डोलै ॥ टेक ॥
जा तन कौं रचि अधिक सँवारा ।
सो तन ले माटी में डारा ॥ १ ॥
जा तन देखि अधिक नर फूले ।
सो तन छाड़ि चल्या रे भूले ॥ २ ॥
जा तन देखि मन में गरबाना ।
मिलि गया माटी तजि अभिमाना ॥ ३ ॥
दादू तन की कहा बड़ाई ।
निमख माहिं माटी मिलि जाई ॥ ४ ॥

१९१

राम नाम तत काहे न बोलै ।
रे मन मूढ़ अनत जिनि डोलै ॥ टेक ॥
भूला भरमत जनम गमावै ।
यहु रस रसना काहे न गावै ॥ १ ॥
क्या झखि औरै परत जँजालै ।
बाणी बिमल हरि काहे न सँभालै ॥ २ ॥
राम बिसारि जनम जिनि खोवै ।
जपि ले जीवनि साफल होवै ॥ ३ ॥
सार सुधा सदा रस पीजै ।
दादू तन धरि लाहा लीजै ॥ ४ ॥

१९२

नाहीं जल खंडा रे, नाहीं सब ब्रह्मंडा रे ।
नाहीं आदि अनंता रे, दादू राम रहंता रे ॥ ४ ॥
नाहीं रे हस नाहीं रे, सत्ति राम सब माहीं रे ॥ टेक ॥
नाहीं धरणि अकासा रे, नाहीं पवन प्रकासा रे ।
नाहीं रवि ससि तारा रे, नहिं पावक परजारा रे ॥ १ ॥
नाहीं पंच पसारा रे, नाहीं सब संसारा रे ।
नहिं काया जीव हमारा रे, नहिं बाजी कौतिगहारा रे ॥ २ ॥
नाहीं तरवर छाया रे, नहिं पंखी नहिं माया रे ।
नाहीं गिरवर बासा रे, नाहीं समेद निवासा रे ॥ ३ ॥

१९३

मन मोहन हो, कठिन बिरह की पीर ।
सुंदर दरस दिखाइये ॥ टेक ॥

सुनहु न दीनदयाल, तव मुख बैन सुनाइये ॥ १ ॥
करुणामय किरपाल, सकल सिरोमणि आइये ॥ २ ॥
मम जीवन प्राण-अधार, अविनासी उर लाइये ॥ ३ ॥
इब हरि दरसन देहु, दादू प्रेम बढ़ाइये ॥ ४ ॥

१९४

मोहन माधो कब मिलै, सकल सिरोमणि राइ ।
तन मन ब्याकुल होत है, दरस दिखावै आइ ॥ टेक ॥
नैन रहे पंथ जोवताँ, रोवन रैणि बिहाइ ।
बाल-सनेही कब मिलै, मो पैं रह्या न जाइ ॥ १ ॥
छिन छिन अंगि अनल दहै, हरि जी कब मिलिहैं आइ ।
अंतरजामी जाणि करि, मेरे तन की तपति बुझाइ ॥ २ ॥
तुम दाता सुख देत हौ, हाँ हो सुणि दीनदयाल ।
चाहैं नैन उतावले, हाँ हो कब देखौं लाल ॥ ३ ॥
चरन कँवल कब देखिहौं, सम्मुख सिरजनहार ।
साँइं संग सदा रहौं, हाँ हो तब भाग हमार ॥ ४ ॥
जीवनि मेरी जब मिलै, हाँ हो तबहीं सुख होइ ।
तन मन में तूही बसै, हाँ हो कब देखौं सोइ ॥ ५ ॥
तन मन की तूँही लखै, हाँ हो सुणि चतुर सुजाण ।
तुम देखे बिन क्यूँ रहौं हाँ हो मोहिं लागे बाण ॥ ६ ॥
बिन देखे दुख पाइये, हाँ हो इब बिलँब न लाइ ।
दादू दरसन कारनै, हाँ हो सुख दीजै आइ ॥ ७ ॥

१९५

राम तहाँ प्रगट रहे भरपूर, आतमा कंवल जहाँ ।
परम पुरिष तहाँ, झिलिमिलि झिलिमिलि नूर ॥ टेक ॥

चंद सूर मधि भाइ, तहाँ बसै राम राइ ।
गंग जमन के तीर, तिरबेणी संगम जहाँ ।
निर्मल बिमल तहाँ, निरखि निरखि निज नीर ॥ १ ॥
आतमा उलटि जहाँ, तेज पुंज रहै तहाँ सहजि बमाइ ।
अगम निगम अनि, यहाँ बसै प्राणपति,
परसि परसि निज आइ ॥ २ ॥
कोमल कुसम दल, निराकार जोति जल वार पार ।
सुन्य सरोवर जहाँ, दादू हंसा रहै तहाँ,
बिलसि बिलसि निज सार ॥ ३ ॥

१९६

राम की राती भई माती, लोक बेद बिधि निषेध ।
भागे सब भरम भेद, अमृत रस पीवै ॥ टेक ॥
भागे सब काल झाल, छूटे सब जग जँजाल ।
बिसरे सब हाल चाल, हरि की सुधि पाई ॥ १ ॥
प्रान पवन जहाँ जाइ, अगम निगम मिले आइ ।
प्रेम मगन रहे समाइ, बिलसै बपु नाहीं ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम पुंज परम सेज ।
परम जोति परम सेज, सुंदरि सुख पावै ॥ ३ ॥
परम पुरिष परम रास, परम लाल सुख बिलास ।
परम मंगल दादू दास, पीव सौं मिलि खेलै ॥ ४ ॥

१९७

इहि बिधि आरती राम की कीजै ।
आत्मा अंतरि वारणा लीजै ॥ टेक ॥
तन मन चंदन प्रेम की माला । अनहद घंटा दीनदयाला ॥ १ ॥

ज्ञान का दीपक पवन की बाती। देव निरंजन पाँचौ पाती॥ २॥
आनंद मंगल भाव की सेवा। मनसा मंदिर आतम देवा॥ ३॥
भगति निरंतर मैं बलिहारी। दादू न जानै सेव तुम्हारी॥ ४॥

१९८

आरती जग जीवन तेरी, तेरे चरन कँवल पर वारी फेरी॥ टेक॥
चित चाँवरी हेत हरि ढारै, दीपक ज्ञान जोति बिचारै। १।
घंटा सबद अनाहद बाजै, आनँद आरति गगना गाजै। २।
धूप ध्यान हरि सेती कीजै, पुहुप प्रीति हरि भाँवरि लीजै। ३।
सेवा सार आत्मा पूजा, देव निरंजन और न दूजा। ४।
भाव भगति सौं आरति कीजै, इहि बिधि दादू जुगि जुगि जीजै।५।

१९९

निराकार तेरी आरती, बलि जाउँ अनंत भवन के राइ। टेक।
सुर नर सब सेवा करैं, ब्रह्मा विस्नु महेस।
देव तुम्हारा भेव न जनैं, पार न पावै सेस। १।
चंद सूर आरति करैं, नमो निरंजन देव।
धरनि पवन आकास आराधैं, सब तुम्हारी सेव। २।
सकल भवन सेवा करैं, मुनियर सिद्ध समाध।
दीन लीन ह्वै रहे संत जन, अविगत के आराध। ३।
जै जै जीवनि राम हमारी, भगति करै त्यौ लाइ।
निराकार की आरति कीजै, दादू बलि बलि जाइ। ४।

२००

बरिखहु राम अमृत धारा।
झिलिमिलि झिलिमिलि सींचनहारा। टेक।

प्राण बेलि निज, नीर न पावै, जलहर बिना कँवल कुम्हिलावै । १ ।
सूकै बेलि सकल बनराइ, रामदेव जल बरिखहु आइ । २ ।
आतम बेली मरै पियास, नीर न पावै दादू दास । ३ ।

२०१

मालिक मिहरबान करीम ।
गुनहगार हर रोज़ हर दम, पनह राखि रहीम । टेक ।
अव्वल आखिर बन्दा गुनही, अमल बद बिसियार ।
गरक़ दुनिया सतार साहिब, दरदबंद पुकार । १ ।
फ़रामोश नेकी बदी, करदम बुराई बद फेल ।
बखशिंदा तूँ आजाब आखिर, हुक्म हाज़िर सैल । २ ।
नाम नेक रहीम राज़िक़, पाक परवरदिगार ।
गुनह फिल करि देहु दादू, तलब दर दीदार । ३ ।

२०२

मूल सींचि बधै ज्यूँ बेला, सो तत तरवर रहै अकेला ॥टेक॥
देबी देखत फिरैं ज्यूँ भूले, खाद्द हलाहल बिष कौं फूले ।
सुख कौं चाहै पड़ै गल पासी, देखत हीरा हाथ थैं जासी ॥१॥
केइ पूजा रचि ध्यान लगावै, बेवल बेखैं खबरि न पावैं ।
तोर पाती जुगति न जानी, इहि भ्रमि रहे भूलि अभिमानी ॥२॥
तीरथ बरत न पूजै आसा, बनखँडि जाहीं रहैं उदासा ।
यूँ तप करि करि देह जलावैं, भरमत डोलैं जनम गँवावैं ॥३॥
सतगुर मिलैं न संसा जाई, ये बंधन सब देइं छुड़ाई ॥
तब दादू परम गति पावैं, सो निज मूरति माहिं लखावै ॥४॥

२०३.

इन बातनि मेरो मन मानै ।
दुतिया दोइ नहीं उर अंतरि, एक एक करि पिव कौं जानै ॥टेक॥
पूरण ब्रह्म देखै सबहिन में, भ्रम न जीव काहू थैं आनै ।
होइ दयाल दीनता सब सौं, अरि पंचनि कौं करै किसानै ॥१॥
आपा पर सम सब तत चीन्है, हरि भजै केवल जस गानै ।
दादू सोई सहजि घरि आनै, संकुट सबै जीव के भानै ॥२॥

२०४

निरंजन यूँ रहै, काहू लिपत न होइ ।
जल थल थावर जगमा, गुण नहिं लागे कोइ ॥टेक॥
धर अंबर लागै नहीं, नहिं लागै ससिहर सूर ।
पाणी पवन लागै नहीं, जहाँ तहाँ भरपूर ॥१॥
निस बासरि लागै नहीं, नहिं लागै सीतल घाम ।
छुध्या त्रिषा लागै नहीं, घटि घटि आतम राम ॥२॥
माया मोह लागै नहीं, नहिं लागै काया जीव ।
काल करम लागै नहीं, परगट मेरा पीव ॥३॥
इकलस एकै नूर हैं, एकलस एकै तेज ।
इकलस एकै जोति है, दादू खेलै सेज ॥४॥

२०५

जागहु जियरा काहे सोवै, सोइ करीमा तौ सुख होवै ॥टेक॥
जा थैं जीवन सो तैं बिसरा, पछिम जाना पंथ न सँबरा ॥
मैं मेरी करि बहुत भुलाना, अजहूँ न चेतै दूरि पयाना ॥१॥
साँईं केरी सेवा नाहीं, फिरि डूबै दरिया माहीं ।
ओर न आवै पार न पावा, झूठा जीवन बहुत भुलावा ॥२॥

मूल न राख्या लाह न लीया, कौड़ी बदलै हीरा दीया।
फिर पछिताना संबुल नाहीं, हारि चल्या क्यूँ पावै साँई ॥३॥
इब सुख कारण फिर दुख पावै, अजहूँ न चेतै क्यूँ डहकावै।
दादू कहै सीख सुणि मेरी, कहहु करीम संभालि सवेरी ॥४॥

२०६

जब से साचे की सुधि पाई।
तब मैं अंगि और नहिं आवै, देखत हूँ सुखदाई ॥टेक॥
ता दिन थैं तन ताप न व्यापै, सुख दुख संगि न जाऊँ।
पावन पीव परसि पद लीन्हा, आनँद भरि गुन गाऊँ ॥१॥
सब सौं संगि नहीं पुनि मेरे, अरस परस कुछ नाहीं।
एक अनंत सोई सँगि मेरे, निरखत हौं निज माहीं ॥२॥
तन मन माहिं सोधि सो लीन्हा, निरखत हौं निज सारा।
सोई संगि सबै सुखदाई, दादू भाग हमारा ॥३॥

२०७

वाल्हा हूं थारी, तूँ म्हारो नाथ।
तुम सूँ पहली प्रीतड़ी, पूरिबलौ साथ ॥टेक॥
वाल्हा मैं हूँ थारो ओलसियौ रे,
राखिस तूं नैं रिदा मँझारि।
हूँ पामूँ पीव आपणों रे,
त्रिभुवन दाता देव मुरारि ॥१॥
वाल्हा मन म्हारे मन माहें राखिस,
आतम एक निरंजन देव।
चित माहैं चित सदा निरंतर,
येणी पेरें थारी सेव ॥२॥

वाल्हा भाव भगति हरि भजन तिहारो ।
प्रेमैं पूरिसि कँवल विगास ।
अभि अंतरि आनँद अबिनासी ।
दादू नी एवै पुरवी आस ॥३॥

२०८

काहे रे बकि मूल गँवावै, राम के नाँइ भलैं सचु पावै ॥टेक॥
बादबिबाद न कीजै लोई, बाद बिबाद न हरि रस होई ॥१॥
मैं तैं मेरी मानै नाहीं, मैंतैं मेटि मिलैं हरि माहीं ॥२॥
हारि जीति सौं हरि रस जाई, समझि देखि मेरे मन भाई ॥३॥
मूल न छाड़ी दादू बौरे जिनि भूलै तूँ बकिबे औरे ॥४॥

२०९

गोबिंद कबहुँ मिलै पिव मेरा ।
चरण कँवल क्यूँ हीं करि देखौ, राखौ नैनहूँ नेरा ॥टेक॥
निरखण का मोहिं चाव घणेरा, कब मुख देखौं तेरा ।
प्राण मिलण कौं भये उदासी, मिलि तूँ मती सवेरा । १ ।
व्याकुल ता थैं भइ तन देही, सिर परि जम का हेरा ।
दादू रे जन राम मिलन कूँ, तपई तन बहुतेरा । २ ।

२१०

काया माहैं बिषमी बाट, काया माहैं ओघट घाट । ३४ ।
काया माहैं पट्टण गाँव, काया माहैं उत्तिम ठाँव । ३५ ।
काया माहैं मंडप छाजै, काया माहैं आप बिराजै । ३६ ।

काया माहैं महल अवास, काया माहैं निहचल वास ।
काया माहैं राज दुवार, काया माहैं बालणहार ।
काया माहैं भरे भँडार, काया माहैं वस्तु अपार ।
काया माहैं नौ निधि होइ, काया माहैं अठ सिधि सोइ ।
काया माहैं हीरा साल, काया माहैं निपजै लाल ।
काया माहैं माणिक भरे, काया माहैं ले ले धरे ।
काया माहैं रतन अमोल, काया माहैं मोल न तोल ।
काया महँ करतार है, सो निधि जाणै नाहिं ।
दादू गुरमुख पाइये, सब कुछ काया माहिं ।
काया माहैं सब कुछ जाणि, काया माहैं लेहु पिछाणि ।
काया माहैं वहु बिस्तार, काया माहैं अनन्त अपार ।
काया माहैं अगम अगाध, काया माहैं निपजै साध ।
काया माहैं कह्या न जाई, काया माहैं रहै ल्यौ लाइ ।
काया माहैं साधन सार, काया माहैं करै विचार ।
काया माहैं अमृत बाणी, काया माहैं सारँग प्राणी ।
काया माहैं खेलै प्राण, काया माहैं पद निर्बाण ।
काया माहैं मूल गहि रहै, काया माहैं सब कुछ लहै ।
काया माहैं निज निरधार, काया माह अपरम्पार ।
काया माहैं सेवा करै, काया माहैं नीझर झरै ।
काया माहैं बास करि, रहै निरन्तर छाइ ।
दादू पाया आदि घर, सतगुर किया दिखाइ ॥

२११

करणी पोच सोच सुख करई ।
लोह की नाव कैसै भौजल तिरई । टेक ।

दखिन जात पछिम कैसैं आवै ।
नैन बिन भूलि बाट कत पावै । १ ।
बिष बन बेलि अमृत फल चाहै ।
खाइ हलाहल अमर उमाहै । २ ।
अग्नि गृह पैसि करि सुख क्यूँ सोवे ।
जलणि जागी धणी सीत क्यू होवै ॥ ३ ॥
पाप पाखँड कियें पुनि क्यू पाइये ।
कूप खनि पड़िबा गगन क्यूं जाइये । ४ ।
कहै दादू मोहिं अचिरज भारी ।
हृदै कपट क्यूँ मिलै मुरारी ॥ ५ ॥

२१२

नेटि रे माटी में मिलना ।
मोड़ि मोड़ि देही काहे कौं चलना । टेक ।
काहे कौं अपना मन डुलावै, यहु तन अपना नीका धरना ।
कोटि बरस तूँ काहे न जीवै, बिचारि देखि आगैं है मरना । १ ।
काहे न अपनी बाट सँवारै, सँजमि रहना सुमिरण करणा ।
गहिला दादू गर्ब न कीजै, यहु संसार पंच दिन भरणा ॥ २ ॥

२१३

नाँउ रे नाँउ रे, सकल सिरोमणि नाँउ रे,
मैं बलिहारी जाउँ रे ॥ टेक ॥
दूतर तारै पार उतारै, नरक निवारै नाँउ रे ॥ १ ॥
तारणहारा भौजल पारा, निर्मल सारा नाँउ रे । २ ।
नूर दिखावै तेज मिलावै, जोति जगावै नाउ रे । ३ ।
सब सुख दाता अमृत राता, दादू माता नाँउ रे ॥ ४ ॥

२१४

मेरे गृह आवहु मेरा, मैं बालक सेवग तेरा ॥ टेक ॥
मात पिता तूँ अम्हचा स्वामी, देव हमारे अंतरजामी ॥ १ ॥
अम्हचा सज्जन अम्हचा बंधू, प्राण हमारे अम्हचा जिंदू ॥२॥
अम्हचा प्रीतम अम्हचा मेला, अम्हची जीवनि आप अकेला ॥३॥
अम्हचा साथी संग सनेही, राम विना,दुख दादू देही ॥ ४ ॥

२१५

वाल्हा म्हारा, प्रेम भगति रस पीजिये,
रमिये रमिता राम, म्हारा वाल्हा रे ।
हिरदा कँवल में राखिये, उत्तिम एहज ठाम,
म्हारा वाल्हा रे ॥ टेक ॥
वाल्हा म्हारा, सतगुर सरणै असरणै,
साध समागम थाइ, म्हारा वाल्हा रे,
वाणी ब्रह्म बखाणिये, आनँद में दिन जाइ,
म्हारा वाल्हा रे ॥ १ ॥
वाल्हा म्हारा आतम अन भै ऊपजै,
उपजै ब्रह्म गियान म्हारा रे ।
सुख सागर में झूलिये, साचौ ये असनान,
म्हारा वाल्हा रे ॥२॥
वाल्हा म्हारा, भौ बंधन सब छूटिये,
कर्म न लागै कोइ, म्हारा वाल्हा रे
जीवनि मुकति फल पामिये, अमर अमय पद होइ,
म्हारा वाल्हा रे ॥३॥
वाल्हा म्हारा, अठ सिधि नौ निधि आँगणै,

परम पदारथ चार म्हारा वाल्हा रे,
दादू जग देखै नहीं, रातौ सिरजनहार,
म्हारा वाल्हा रे ॥४॥

२१६

आवौ राम दया करि मेरे, बार बार बलिहारी तेरे ॥टेक॥
बिरहनि आतुर पंथ निहारै, राम राम कहि पीव पुकारै ॥१॥
पंथी बूझै मारग जोवै, नैन नीर जल भरि भरि रोवै ॥२॥
निस दिन तलफै रहै उदास, आतम राम तुम्हारे पास ॥३॥
बप बिसरै तन की सुधि नाहीं, दादू बिरहनि मिरतक माहीं ॥४॥

२१७

पिव देखे बिन क्यूँ रहौं, जिय तलफै मेरा ।
सब सुख आनंद पाइये, मुख देखौं तेरा ॥टेक॥
पिब बिन कैसा जीवना, मोहिं चैन न आवै ।
निर्धन ज्यूँ धन पाइये, जब दरस दिखावै ॥१॥
तुम बिन क्यूँ धीरज धरौं, जौं लौं तोहि न पाऊँ ।
सन्मुख ह्वै सुख दीजिवे बलिहारी जाऊँ ॥२॥
बिरह बियोग न सहि सकौं, काइर घट काचा ।
पावन परसन पाइये, सुनि साहिब साचा ॥३॥
सुनिये मेरी बीनती, इब दरसन दीजै ।
दादू देखन पावही, तैसैं कुछ कीजै ॥४॥

२१८

ये मन मेरा पीव सौं, औरन सौं नाहीं ।
पिव बिन पलहि न जीव सौं, ये उपजे माहीं । टेक॥

देखि देखि सुख जीव सौं, तहँ धूप न छाहीं ।
अजरावर मन बंधिया, ता थैं अनत न जाहीं ॥१॥
तेज पुंज फल पाइया, तहाँ रस खाहीं ।
अमर बेलि अमृत झरै, पिव पीव अघाहीं ॥२॥
प्राणपती तहँ पाइया, जहं उलटि समाहीं ।
दादू पिव परचा भया, हियरे हित लाहीं ॥३॥

२१९

तुम्ह बिचि अंतर निजि परै माध, भावै तन धन लेहु ।
भावै सरग नरक रसातल, भावै करवत देहु ॥टेक॥
भावै बिपति देहु दुख संकुट, भावै संपति सुख सरीर ।
भावै घर बन राव रंक करि, भावै सागर तीर ॥१॥
भावै बंध मुकत करि माधव, भावै त्रिभुवन सार ।
भावै सकल दोष धरि माधव, भावै सकल निवारि ॥२॥
भावै धरणि गगन धरि माधव, भावै सीतल सूर ,
दादू निकटि सदा सँगि माधव, तूँ जिनि होवै दूर ॥३॥

२२०

कोलीं साल न छाडै रे, सब धावर काढ़ै रे ॥टेक॥
प्रेम प्राण लगाई धागै, तत्त तेल निज दीया ।
एक मना इस आरँभ लागा, ज्ञान राछ भरि लीया ।
नाँव नली भरि बुणकर लागा, अंतर-गति रँग राता ।
ताणैं बाणैं जीव जुलाहा, परम तत्त सौं माता ।

२२१

सुन्दर राम राया परम ज्ञान परम ध्यान,
परम प्राण आया ॥ टेक ॥

अकल सकल अति अनूप, छाया नहिं माया ।
निराकार निराधार, बार पार न पाया ॥ १ ॥
गंभीर धीर नीधि सरीर, निर्गुण निराकारा ।
अखिल अमर परम पुरिष, निर्मल निज सारा ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम जोति परकासा ।
परम पुंज परापर, दादू निज दासा ॥ ३ ॥

२२२

एकहि एकैं भया अनंद, एकहि एकैं भागे दंद ॥ टेक ॥
एकहि एकैं एक समान, एकहि एकैं पद निर्बान ॥ १ ॥
एकहि एकैं त्रिभुवन सार, एकहि एकैं अगम अपार ॥ २ ॥
एकहि एकैं निर्भै होइ, एकहि एकैं काल न कोइ ॥ ३ ॥
एकहि एकैं घट परकास, एकहि एक निरंजन बास ॥ ४ ॥
एकहि एकैं आपहि आप, एकहि एकैं माइ न बाप ॥ ५ ॥
एकहि एकैं सहज सरूप, एकहि एकैं भये अनूप ॥ ६ ॥
एकहि एकैं अनत न जाइ, एकहि एकैं रह्या समाइ ॥ ७ ॥
एकहि एकैं भये लैलीन, एकहि एकैं दादू दीन ॥ ८ ॥

२२३

सोई देव पूजौं जे ठाँकी नहिं घड़िमा ।
गरभ बास नाहीं औतरिया ॥टेक॥
बिन जल संजम सदा सोइ देवा, भाव भगति करौं हरि सेवा ॥१॥
पाती प्राण हरिदेव चढ़ाऊँ, सहज समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ ॥२॥
इहि बिधि सेवा सदा तहँ होई, अलख निरंजन लखै न कोई ॥३॥
ये पूजा मेरे मन मानै, जिहि बिधि होई सु दादू न जानै ॥४॥

२२४

इब हम राम सनेही पाया ।
आगम अनहद सौं चित लाया ॥ टेक ॥
तन मन आतम ता कौं दीन्हा ।
तब हरि हम अपना करि लीन्हा ॥ १ ॥
बाणी बिमल पं चपराना ।
पहिली सीस मिले भगवाना ॥ २ ॥
जीवन जनम सुफल करि लीन्हा ।
पहिली चेते तिन भल कीन्हा ॥ ३ ॥
औसरि आपा ठौर लगावा ।
दादू जीवत ले पहुँचावा ॥ ४ ॥

२२५

तिस घरि जाना वे, जहाँ वे अकल सरूप ।
सो इब ध्याइये रे, सब देवनि का भूप ॥ १ ॥
अकल सरूप पीव का, बान वरन न पाइये ।
अखंड मंडल माहिं रहै, सोई प्रीतम गाइये ॥ २ ॥
गावहु मन बिचारा वे, मन बिचारा सोई सारा,
प्रगट पीव ते पाइये ।
साईं सेती संग साचा, जीवत तिस घरि जाइये ॥ ३ ॥
अकल सरूप पीव का, कैसैं करि आलेखिये ।
सुन्य मंडल माहिं साचा, नैन भरि सो देखिये ॥ ४ ॥
देखौं लोचन सार वे, देखौं लोचन सारा सोई,
प्रगट होइ यह अचंभा पेखिये ।
दयावंत दयाल ऐसौ, बरण अति बसेखिये ॥ ५ ॥
अकल सरूप पीव का, प्राण जीव का सोई जन जे पावई ।

अकल सकल अति अनूप, छाया नहिं माया ।
निराकार निराधार, बार पार न पाया ॥ १ ॥
गंभीर धीर नीधि सरीर, निर्गुण निराकारा ।
अखिल अमर परम पुरिष, निर्मल निज सारा ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम जोति परकासा ।
परम पुंज परापर, दादू निज दासा ॥ ३ ॥

२२२

एकहि एकैं भया अनंद, एकहि एकैं भागे द्वंद ॥ टेक ॥
एकहि एकैं एक समान, एकहि एकैं पद निर्बान ॥ १ ॥
एकहि एकैं त्रिभुवन सार, एकहि एकैं अगम अपार ॥ २ ॥
एकहि एकैं निर्भै होइ, एकहि एकैं काल न कोइ ॥ ३ ॥
एकहि एकैं घट परकास, एकहि एक निरंजन बास ॥ ४ ॥
एकहि एकैं आपहि आप, एकहि एकैं माइ न बाप ॥ ५ ॥
एकहि एकैं सहज सरूप, एकहि एकैं भये अनूप ॥ ६ ॥
एकहि एकैं अनत न जाइ, एकहि एकैं रह्या समाइ ॥ ७ ॥
एकहि एकैं भये लैलीन, एकहि एकैं दादू दीन ॥ ८ ॥

२२३

सोई देव पूजौं जे ठाँकी नहिं घड़िमा ।
गरभ बास नाहीं औतरिया ॥टेक॥
बिन जल संजम सदा सोइ देवा, भाव भगति करौं हरि सेवा ॥१॥
पाती प्राण हरिदेव चढ़ाऊँ, सहज समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ ॥२॥
इहि बिधि सेवा सदा तहँ होई, अलख निरंजन लखै न कोई ॥३॥
ये पूजा मेरे मन मानै, जिहि बिधि होई सु दादू न जानै ॥४॥

२२४

इब हम राम सनेही पाया ।
आगम अनहद सौं चित लाया ॥ टेक ॥
तन मन आतम ता कौं दीन्हा ।
तब हरि हम अपना करि लीन्हा ॥ १ ॥
बाणी बिमल पं चपराना ।
पहिली सीस मिले भगवाना ॥ २ ॥
जीवन जनम सुफल करि लीन्हा ।
पहिली चेते तिन भल कीन्हा ॥ ३ ॥
औसरि आपा ठौर लगावा ।
दादू जीवत ले पहुँचावा ॥ ४ ॥

२२५

तिस घरि जाना वे, जहाँ वे अकल सरूप ।
सो इब ध्याइये रे, सब देवनि का भूप ॥ १ ॥
अकल सरूप पीव का, बान बरन न पाइये ।
अखंड मंडल माहिं रहै, सोई प्रीतम गाइये ॥ २ ॥
गावहु मन बिचारा बे, मन बिचारा सोई सारा,
प्रगट पीव ते पाइये ।
साईं सेती संग साचा, जीवत तिस घरि जाइये ॥ ३ ॥
अकल सरूप पीव का, कैसैं करि आलेखिये ।
सुन्य मंडल माहिं साचा, नैन भरि सो देखिये ॥ ४ ॥
देखौं लोचन सार वे, देखौं लोचन सारा सोई,
प्रगट होइ यह अचंभा पेखिये ।
दयावंत दयाल ऐसौ, बरण अति बसेखिये ॥ ५ ॥
अकल सरूप पीव का, प्राण जीव का सोई जन जे पावई ।

दयावंत दयाल ऐसौ, सहजैं आप लखावई ॥ ६ ॥
लखै सुलखणहार वे, लखै सोई सँग होई, अगम बैन सुनावही।
सब दुख भागा रंग लागा, काहे न मंगल गावही ॥ ७ ॥
अकल सरूपी पीव का, कर कैसैं करि आणिये।
निरंतर निर्धार आपै, अंतरि सोई जाणिये ॥ ८ ॥
जाणहु मन बिचारा वे, मनि बिचारा सोई सारा।
सुमिरि सोई बखानिये।
स्रीरंग सेती रंग लागा, दादू तौ सुख मानिये ॥ ९ ॥

२२६

गोव्यँद के चरनों ही ल्यौ लाऊँ।
जैसें चात्रिग बन में बोलै, पीव पीव करि ध्याऊँ ॥ टेक ॥
सुरजन मेरी सुनहु बीनती, मैं बलि तेरे जाऊँ।
बिपति हमारी तोहि सुनाऊँ, दे दरसन क्यूं ही पाऊँ ॥ १ ॥
जात दुक्ख सुख उपजत तन कौं, तुम सरनागति आऊँ।
दादू कौं दया करि दीजै, नाँउ तुम्हारौ गाऊँ ॥ २ ॥

२२७

डरिये रे डरिये, परमेसुर थैं डरिये रे।
लेखा लेवै भरि भरि देवै, ता थैं बुरा न करिये रे ॥ टेक ॥
साचा लीजी साचा दीजी, साचा सौदा कीजो रे।
साचा राखी झूटा नाखी, बिष ना पीजी रे ॥ १ ॥
निर्मल गहिये निर्मल रहिये, निर्मल कहिये रे।
निर्मल लीजी निर्मल दीजी, अनत न बहिये रे ॥ २ ॥
साह पठाया बनिज न आया, जिनि डहकावै रे।
झूठ न भावै फेरि पठावै, कीया पावै रे ॥ ३ ॥

पंथ दुहेला जाइ अकेला, भार न लीजी रे।
दादू मेला होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे॥ ४॥

२२८

काइमा कीरति करौंली रे, तूँ मोटौ दातार।
सब तैं सिरजीला साहिबजीं, तू मोटौ कर्तार॥ टेक॥
चौदह भवन भानै घड़ै, घड़त न लागै बार।
थापै उथपै तूँ धणी, धनि धनि सिरजनहार॥ १॥
धरती अंबर तैं धर्‌या, पाणी पवन अपार।
चंद सूर दीपक रच्या, रैण दिवस बिस्तार॥ २॥
ब्रह्मा संकर तैं किया, बिस्नु दिया अवतार।
सुर नर साधू सिरजिया, करि ले जीव बिचार॥ ३॥
आप निरंजन ह्वै रह्यो, काइमौं कौतिगहार।
दादू निर्गुण गुण कहै, जाउँली हौं बलिहार॥ ४॥

२२९

ये खुहि पये सब भोग बिलासन, तैसहु वा कौ छत्र
सिंघासन॥ टेक॥
जनत हुँ राम भिस्त नहिं भावै, लाल पलिंग क्या कीजै।
भाहि लगै इहि सेज सुखासण, मे कौं देखण दीजै॥ १॥
बैकुंठ मुकति सरग क्या कीजै, सकल भवन नहिं भावै।
भठी पये सब मंडप छाजे, जे घरि कंत न आवै॥ २॥
लोक अनंत अभय क्या कीजै, मैं बिरही जन तेरा।
दादू दरसन देखण दीजै, ये सुनि साहिब मेरा॥ ३॥

२३०

अल्ला तेरा जिकर फिकर करते हैं।
आसिकाँ मुस्ताक तेरे, तर्स तर्स मरते हैं ॥ टेक ॥
खलक खेस दिगर नेस, बैठे दिन भरते हैं।
दायम दरबार तेरे गैर महल डरते हैं ॥ १ ॥
तन सहीद मन सहीद, रात दिवस लड़ते हैं।
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, इस्क आग जलते हैं ॥ २ ॥
जान तेरा जिंद तेरा, पावों सिर धरते हैं।
दादू दीवान तेरा, जरखरीद घर के हैं ॥ ३ ॥

२३१

मुखि बोलि स्वामी, तूँ अंतरजामी,
तेरा सबद सहावै रामजी ॥ टेक ॥
धेन चरावन बेन बजाबन, दरस दिखावन कामिनी ॥ १ ॥
बिरह उपावन तपति बझावन, अंगि लगावन भामिनी ॥ २ ॥
संगि खिलावन रास बनावन, गोपी भावन भूधरा ॥ ३ ॥
दादू तारण दुरित निवारण, संत सुधारण रामजी ॥ ४ ॥

२३२

विषम बार हरि अधार, करुणा बहु नामी।
भगति भाइ बेगि आइ, भीड़- भँजन स्वामी ॥ टेक ॥
अंत अधार संत सधार, सुंदर सुखदाई।
काम क्रोध काल ग्रसत, प्रगटयौ हरि आई ॥ १ ॥
पूरण प्रतिपाल कहिये, सुमिर्‌याँ थैं आवै।
भर्म कर्म मोह लागे, काहे न छुड़ावै ॥ २ ॥
दीनदयाल होहु कृपाल, अंतरजामी कहिये।

एक जीव अनेक लागे, कैसैं दुख सहिये ॥ ३ ॥
पावन पीव चरण सरण. जुगि जुगि तैं तारे ।
अनाथ नाथ दादू के, हरि जी हमारे ॥ ४ ॥

२३३

मेरा गुरु आप अकेला खेलै ।
आपै देवै आपै लेवै आपै द्वै कर मेलै ॥ टेक ॥
आपै आप उपावै माया, पंच तत्त करि काया ।
जीव जनम लै जग में आया, आया काया माया ॥ १ ॥
धरती अंबर महल उपाया, सब जग धंधै लाया ।
आपै अलख निरंजन राया, राया लाया उपाया ॥ २ ॥
चंद सूर दोइ दीपक कीन्हा, राति दिवस करि लीन्हा ।
राजिक रिजक सबनि कौं दीन्हा, दीन्हा लीन्हा कीन्हा ॥ ३ ॥
परम गुरु सो प्राण हमारा, सब सुख देवै सारा ।
दादू खेलै अनत अपारा, अपारा सारा हमारा ॥ ४ ॥

२३४

अबिगत की गति कोइ न लहै, सब अपना उनमान कहै ।टेक।
केते ब्रह्मा बेद बिचारैं, केते पंडित पाठ पढ़ैं ।
केते अनभै आतम खोजैं, केते सुर नर नाँव रटैं ॥ १ ॥
केते ईसुर आसणि बैठे, केते जोगी ध्यान धरैं ।
केते मुनियर मन कूँ मारैं, केते ज्ञानी ज्ञान करैं ॥ २ ॥
केते पीर केते पैगंबर, केते पढ़ैं कुराना ।
केते काजी केते मुल्ला, केते सेख सवाया ॥ ३ ॥
केते पारिख अंत न पावैं, वार पार कुछ नाहीं ।
दादू कीमति कोइ न जानै, केते आवैं जाहीं ॥ ४ ॥

२३५

रँग लागौ रे राम कौ, सो रँग कदे न जाई रे ।
हरि रँग मेरौ मन रँग्यौं, और न रंग सुहाई रे ॥ टेक ॥
अबिनासी रँग ऊपनौ, रचि मचि लागौ चौलौ रे ।
सो रँग सदा सुहावणौ, ऐसौ रंग अमोलौ रे ॥ १ ॥
हरि रँग कदे न ऊतरै, दिन दिन होइ सुरंगौ रे ।
नित्त नवौ निरवाण है, कदे न होइला भंगौ रे ॥ २ ॥
साचौ रँग सहजैं मिल्यौ, सुंदर रंग अपारौ रे ।
भाग बिना क्यूँ पाइये, सब रंग माहैं सारौ रे ॥ ३ ॥
अबरण कौ का बरणिये, सो रँग सहज सरूपौ रे ।
बलिहारी उस रंग को, जन दादू देखि अनूपौ रे ॥ ४ ॥

२३६

पंथीड़ा बूझै बिरहणी, कहिनैं पीव की बात ।
कब घर आवै कब मिलै, जोऊँ दिन अरु राति, पंथीड़ा ॥टेक॥
कहँ मेरा प्रीतम कहँ बसै, कहाँ रहै करि बास ।
कहँ ढूँढौं कहँ पाइये, कहाँ रहै किस पास, पंथीड़ा ॥ १ ॥
कौण देस कहँ जाइये, कीजै कौण उपाइ ।
कौण अंग कैसें रहै, कहा करै समझाइ, पंथीड़ा ॥ २ ॥
परम सनेही प्राण का, सो कत देहु दिखाइ ।
जीवनि मेरे जीव की, सो मुझ आणि मिलाइ, पंथीड़ा ॥ ३ ॥
नैन न आवै नींदड़ी, निस दिन तलफत जाइ ।
दादू आतुर बिरहणी, क्यौंकरि रैनि बिहाइ, पंथीड़ा ॥ ४ ॥

२३७

साध कहैं उपदेस बिरहणी ।
तन भूलै तब पाइये, निकट भया परदेस, बिरहणी ॥ टेक ॥

तुमहीं माहैं ते बसैं, तहाँ रहे करि बास ।
तहँ ढूँढ़े पिव पाइये, जीवनि जीव के पास, बिरहणी ॥ १ ॥
परम देश तहँ जाइये, आतम लीन उपाइ ।
एक अंग ऐसें रहै, ज्यौं जल जलहिं समाइ, बिरहणी ॥ २ ॥
सदा संगाती आपणा, कबहूँ दूरि न जाइ ।
प्राण सनेही पाइये, तन मन लेहु लगाइ, बिरहणी ॥ ३ ॥
जागे जगपति देखिये, परगट मिलिहैं आइ ।
दादू सन्मुख ह्वै रहै, आनंद अंगि न माइ, बिरहणी ॥ ४ ॥

२३८

रामजी नाँव बिना दुख भारी, तेरे साधन कही बिचारी ॥ टेक ॥
केई जोग ध्यान गहि रहिया, केई कुल के मारग बहिया ।
केई सकल देव कौं ध्यावैं, केई रिधि सिधि चाहैं पावैं ॥ १ ॥
केई बेद पुरानौं माते, केई माया के संगि राते ।
केई देस दिसंतर डोलैं, केई ज्ञानी ह्वै बहु बोलैं ॥ २ ॥
केई काया कसैं अपारा, केई मर खड्ग की धारा ।
केई अनंत जिवन की आसा, केई करैं गुफा में बासा ॥ ३ ॥
आदि अंति जे जागे, सो तौ राम नाम ल्यौ लागे ।
इब दादू इहै बिचारा, हरि लागा प्राण हमारा ॥ ४ ॥

२३९

मनाँ भजि राम लीजे ।
साध संगति सुमिरि सुमिरि, रसना रस पीजे ॥ टेक ॥
साधू जन सुमिरण करि, केते जपि जागे ।
अगम निगम अमर किये, काल कोइ न लागे ॥ १ ॥
नीच ऊँच चिंतन करि, सरणागति लीये ।

भगति मुकति अपणी गति, ऐसैं जन कीये ॥ २ ॥
केते तिरि तीर लागे, बंधन भव छूटे ।
कलिमल बिष जुग जुग के, राम नाम खूटे ॥ ३ ॥
भरम करम सब निवारि, जीवन जपि सोई ।
दादू दुख दूर-करण, दूजा नहिं कोई ॥ ४ ॥

२४०

क्यौं बिसरै मेरा पीव पियारा ।
जीव की जीवन प्राण हमारा ॥ टेक ॥
क्यौंकर जीवै मीन जल बिछुरें, तुम बिन प्राण सनेही ।
च्यंतामणि जब कर थैं छूटै, तब दुख पावै देही ॥ १ ॥
माता बालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै ।
निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसैं करि जीवै ॥ २ ॥
बरखहु राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा ।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ॥ ३ ॥

२४१

अमे बिरहणिया राम तुम्हारड़ियाँ ।
तुम बिन नाथ अनाथ, काँइ बिसारड़ियाँ ॥ टेक ॥
अमने अंग अनल परजाले, नाथ निकट नहिं आवै रे ।
दरसन कारण बिरहणि व्याकुल, और न कोई भावै रे ॥ १ ॥
आप अपरछन अमने देखे, आपणपौ न दिखाड़ै रे ।
प्राणी पिंजर लेइ रह्यौ रे, आड़ा अन्तर पाड़ै रे ॥ २ ॥
देव देव करि दरसन माँगै, अंतरजामी आपै रे ।
दादू बिरहणि बन बन ढूँढै, ये दुख काँइ न कापै रे ॥ ३ ॥

२४२

नमो नमो हरि नमो नमो ।
ताहि गुसाईं नमो नमो, अकल निरंजन नमो नमो ।
सकल बियापी जिहि जग कीन्हा, नारायण निज नमो नमो ॥ टेक ॥
जिन सिरजे जल सीस चरण कर, अविगत जीव दियौ ।
स्रवण सँवारि नैन रसना मुख, ऐसौ चित्र कियौ ॥ १ ॥
आप उपाइ किये जग जीवन, सुर नर संकर साजे ।
पीर पैगंबर सिध अरु साधिक, अपने नाँइ निवाजे ॥ २ ॥
धरती अंबर चंद सूर जिन, पाणी पवन किये ।
भानन घड़न पलक में केते, सकल सँवारि लिये ॥ ३ ॥
आप अखंडित खंडित नाहीं, सब समि पूरि रहे ।
दादू दीन ताहि नइ बंदति, अगम अगाध कहे ॥ ४ ॥

२४३

हरि भजताँ किमि भाजिये, भाजे भल नाहीं ।
भागें भल क्यूँ पाइये, पछिताबै माहीं ॥ टेक ॥
सूरौ सो सहजैं भिड़ै, सार उर झेलै ।
रण रोकै भाजै नहीं, ते मान न मेलै ॥ १ ॥
सती सत्त साचा गहै, मरणे न डराई ।
प्राण तजै जग देखताँ, पियडौ उर लाई ॥ २ ॥
प्राण पतंगा यौं तजै, वो अंग न मोड़े ।
जोबन जारै जोति सूँ, नैना भल जोड़ै ॥ ३ ॥
सेवग सो स्वामी भजै, तन मन तजि आसा ।
दादू दरसन ते लहै, सुख संगम पासा ॥ ४ ॥

२४४

सुणि तूँ मना रे, मूरिख मूढ बिचार ॥ टेक ॥
आवै लहरि बिहावणी, दवे देह अपार ॥ १ ॥

करिबौ है तिमि कीजिये रे, सुमिरि सो आधार ॥ २ ॥
चरण बिहूणौ चालिबो रे, संभारी ले सार ॥ ३ ॥
दादू ते हजि लीजिये रे, साचौ सिरजनहार ॥ ४ ॥

२४५

पारब्रह्म भजि प्राणिया, अविगत एक अपार ।
अबिनासी गुर सेविये, सहजैं प्राण अधार ॥टेक॥
ते पुर प्राणी तेहनौ, अबिचल सदा रहंत ।
आदि पुरिस ते आपणौ पूरण परम अनंत ॥१॥
अविगत आसण कीजिये, आपैं आप निधान ।
निरालंब भजि तेहनौ, आनँद आतम राम ॥२॥
निरगुण निहचल थिर रहै, निराकार निज सोइ ।
ते सति प्राणी सेविये, लै समाधि रति होइ ॥३॥
अमर आप रमिता रमै, घटि घटि सिरजनहार ।
गुण अतीत भजि प्राणिया, दादू येहु बिचार ॥४॥

२४६

हिंदू तुरक न जाणों दोइ ।
सांईं सबनि का सोई है रे, और न दूजा देखौं कोइ ॥ टेक ॥
कीट पतंग सबै जोनिन में जल थल संगि समाना सोई ।
पीर पैगंबर देवा दानव, मीर मलिक मुनि जन कौं मोहि ॥ १ ॥
कर्ता है रे सोई चीन्हौं, जिनि वै क्रोध करै रे कोइ ।
जैसैं आरसी मंजन कीजै, राम रहीम देही तब धोइ ॥ २ ॥
साँईं केरी सेवा कीजै, पायौ धन काहे कौं खोइ ।
दादू रे जन हरि भजि लीजै, जनमि जनमि जे सुरजन होइ ॥ ३ ॥

२४७

निन्दत है सब लोक बिचारा, हम कौं भावै राम पियारा ॥ टेक ॥
निरसंसै निरदोष लगावै , ता थैं मी कौं अचिरज आवै ॥ १ ॥
दुबिधा द्वै पष रहिता जे , ता सनि कहत गये रे ये ॥ २ ॥
निरबैरी निहकामी साध , ता सिरि देत बहुत अपराध ॥ ३ ॥
लोहा कंचन एक समान, ता सनि कहत करत अचिमान ॥ ४ ॥
निन्दा अस्तुति एकै तौलै , तासु कहैं अपवादहि बोलै ॥ ५ ॥
दादू निन्दा ता कौं भावै , जा के हिरदै राम न आवै ॥ ६ ॥

२४८

ऐसा अवधू राम पियारा , प्राण प्यंड थैं रहै नियारा ॥ टेक ॥
जब लग काया तब लग माया, रहै निरंतर अवधू राया ॥ १ ॥
अठ सिधि भाई नौ निधि आई, निकटि न जाई राम दुहाई ॥ २ ॥
अमर अभै पद बैकुंठ बास, छाया माया रहै उदास ॥ ३ ॥
साँईं सेवग सब दिखलावै, दादू दूजा दिष्टि न आवै ॥ ४ ॥

२४९

कब देखौं नैनहुँ रेख रती, प्राण मिलन कौं भई मती ।
हरि सौं खेलौं हरी गती, कब मिलि हैं मोहिं प्राणपती ॥ टेक ॥
बलि कीती क्यूँ देखौंगी रे, मुझ माहैं अति बात अनेरी ।
सुणि साहिब इक बिनती मेरी, जनम जनम हूँ दासी तेरी ॥ १ ॥
कहु दादू सो सुनसी साँईं, हौं अबला बल मुझ में नाहीं ।
करम करी घरि मेरे आई, तौ सोभा पिव तेरे ताईं ॥ २ ॥

२५०

राम नाम गुर सबद सौं, रे मन पेल भरम ।
निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू काटिकरम ।
दादू बिन पाइन का पंथ है, क्यौं करि पहुँचै प्राण ।
बिकट धाट औघट खरे, माहिं सिखर असमान ॥
मन ताजी चेतन चढ़ै, ल्यौ की करै लगाम ।
सबद गुरू का ताजणाँ, कोइ पहुँचै साध सुजान ।

२५१

साधौं सुमिरण सो कहा, जेहि सुमिरण आपा भूल ।
दादू गहि गम्भीर गुर, चेतन आनँद मूल ॥
दादू आप सुवारथ सब सगे प्राण सनेही नाहिं ।
प्राण सनेही राम है, कै साधू कलि माहिं ॥
सुख का साथी जगत सब, दुख का नाहिं कोइ ।
दुख का साथी साइयाँ, दादू सतगुर होइ ॥
सगे हमारे साधु हैं सिर पर सिरजनहार ।
दादू सतगुर सो सगा, दूजा धुंध बिकार ॥
दादू के दूजा नहीं, एकै आतम राम ।
सतगुर सिर पर साध सब, प्रेम भगति बिसराम ॥

२५२

दादू सुधि बुधि आतमा, सतगुर परसै आइ ।
दादू भृंगी कीट ज्यौं, देखत ही ह्वै जाइ ॥
दादू भृंगी कीट ज्यौं, सतगुर सेती होइ
आप सरीखे करि लिये, दूजा नाहीं कोइ ॥
दादू कच्छिप राखै दृष्टि में कुंजौं के मन माहिं ।

सतगुर राखै आपणाँ, दूजा कोई नाहिं ॥
बच्चौं के माता पिता, दूजा नहीं कोइ ।
दादू निपजै भाव सों, सतगुर के घट होइ ॥

२५३

एकै सबद अनंत सिप, जब सतगुर बोलै ।
दादू जड़े कपाट सब, दे कूँची खोलै ॥
बिनही कीया होइ सब, सनमुख सिरजनहार ।
दादू करि करि को मरै, सिप साखा सिर भार ॥
सूरज सनमुख आरसी, पावक किया प्रकास ।
दादू साईं साध बिच, सहजैं निपजै दास ॥

२५४

दादू पंचौं ये परमोधि ले, इन हीं कूँ उपदेस ।
यहु मन अपणा हाथ करि, तौ चेला सब देस ॥
अमर भये गुर ज्ञान सों, केते यहि कलि माहिं ।
दादू गुर के ज्ञान बिन, केते मरि मरि जाहिं ॥
औषधि खाइ न पछि रहै, बिषम व्याधि क्यौं जाइ ।
दादू रोगी बावरी, दोष बैद कूँ लाइ ।
बैद बिथा कहै देखि करि, रोगी रहै रिसाइ ।
मन भाहीं लीये रहै, दादू व्याधि न जाइ ॥
दादू बैद बिचारा क्या करै रोमी रहै न साच ।
खाटा मिठा चरपरा, माँगै मेरा बाच ॥

२५५

भाई रे ऐसा एक बिचारा, यूँ हरि गुर कहै हमारा ॥ टेक ॥
जागत सूते सोवत सूते, जब लग राम न जाना ।
जागत जागे सोवत जागे, जब राम नाम मन माना ॥ १ ॥
देखत अंधे अंध भी अंधे, जब लग सत्त न सूझै ।
देखत देखै अंध भी देखै, जब राम सनेही बूझै ॥ २ ॥
बोलत गूंगे गुंग भी गूंगे, जब लग तत्त न चीन्हा ।
बोलत गूंगे गुंग भी बोले, जब राम नाम कहि दीन्हा ॥ १ ॥
जीवत मूए मुए भी मूए, जब लग नहिं परकासा ।
जीवत जीये मुए भी जीये, दादू राम निवासा ॥ ४ ॥

२५६

दादू नीका नाँव है, तीन लोक तत सार ।
राति दिवस रटिबो करी, रे मन इहै बिचार ।
दादू नीका नाँव है, हरि हिरदै न बिसारि ।
मूरति मन माहैं बसै, साँसै साँस सँभारि ।
साँसै साँस सँभालताँ, इक दिन मिलिहै आइ ।
सुमिरण पैंड़ा सहज का, सतगुर दिया बताइ ।
दादू नीका नाँव है, सो तूँ हिरदै राखि ।
पाखँड परपँच दूर करि, सुनि साधू जन की साखि ।
दादू नीका नाँव है, आप कहै समझाइ ।

२५७

और आरँभ सब छाड़ि दे, राम नाम ल्यौ लाइ ।
राम भजन का सोच क्या, करताँ होइ सो होइ ।

दादू राम सँभालिये, फिरि बूझिये न कोई ।
राम तुम्हारे नाँव बिन, जे मुख निकसे और ।
तौ इस अपराधी जीव कौं, तीन लोक कत ठौर ।
छिन छिन राम सँभालताँ, जे जिव जाइ त जाइ ।
आतम के आधार कौं, नाहीं आन उपाय ।
एक महूरत मन रहै, नाँव निरंजन पास ।
दादू तब हीं देखताँ, सकल करम का नास ।
सहजै हीं सब होइगा, गुण इन्द्री का नास ।
दादू राम सँभालताँ, कटैं करम के पास ।
राम नाम गुर सबद सौं, रे मन पेलि भरम ।
निहकरमी सौं मन मिल्या, दादू काटि करम ।
एक राम के नाँव बिन, जिव की जरनि न जाइ ।
दादू केते पचि मुए, करि करि बहुत उपाइ ।
एक राम की टेक गहि, दूजा सहज सुभाइ ।
राम नाम छाड़े नहीं, दूजा आवै जाइ ।
दादू राम अगाध है, परिमित नाहीं पार ।
अबरण बरण न जाणिये, दादू नाँइ अधार ।
दादू राम अगाध है, अबिगति लखै न कोइ ।
निर्गुण सर्गुण का कहै, नाँइ बिलवन होइ ।
दादू राम अगाध है, अकल अगोचर एक ।
दादू नाँइ बिलंबिये, साधू कहैं अनेक अनेक ।
दादू एकै अल्लह राम है, समरथ साईं सोइ ।
मैदे के पकवान सब, खाताँ होइ सो होइ ।
असर्गुण निर्गुण ह्वै रहे, जैसा तैसा लीन ।
हरि सुमरिण ल्यौ लाइये, का जाणौं का कीन्ह ।
दादू सिरजनहार के, केते नाव अनंत ।
चित आवै सो लीजिये यौं साधू सुमिरैं संत ॥

दादू राम कहे सब रहत है, आदि अंत लौं सोइ ।
राम कहे बिन जात है, यह मन बहुरि न होइ ॥
दादू राम कहे सब रहत है, जीव ब्रह्म की लार ।
राम कहे बिन जात है, रे मन हो हुसियार ॥
हरि भजि साफिल जीवना, पर उपगार समाइ ।
दादू मरणा तहँ भला, जहं पसु पंखी खाइ ॥
दादू राम सबद मुख ले रहै, पीछे लागा जाइ ।
मनसा बाचा कर्मना, तेहि तत सहज समाइ ॥
दादू रचि मचि लागे नाँव सूँ, राते माते होइ ।
देखैंगे दीदार कूँ सुख पावैंगे सोइ ॥
दादू साईं सेवौं सब भले, बुरा न कहिये कोइ ।
सारौं माहैं सो बुरा, जिस घट नाँव न होइ ॥
दादू जियरा राम बिन, दुखिया येहि संसार ।
उपजै बिनसै खपि मरै, सुख दुख बारम्बार ॥
राम नाम रुचि ऊपजै, लेवै हित चित लाइ ।
दादू सोई जीयरा, काहे जमपुर जाइ ॥
दादू नीकी बरियाँ आइ करि, राम जपि लीन्हा ।
आतम साधन सोधि करि, कारज भल कीन्हा ॥
दादू अगम बस्त पानैं पड़ी, राखी मंझि छिपाइ ।
छिन छिन सोई सँभालिये, मति वै बीसरि जाइ ॥
दादू उज्जल निर्मला, हरि रँग राता होइ ।
काहे दादू पचि मरै, पानी सेती धोइ ॥
सरीर सरोवर राम जल, माहैं संजम सार ।
दादू सहजें सब गये, मन के मैल बिकार ॥
दादू राम नामं जलं कृत्वा स्नानं सदा जिताः ।
तन मन आतम निर्मलं, पंच भूपापंगतः
दादू उत्तम इंद्री निग्रहं, मुच्यते माया मनः ।

परम पुरुष पुरातनं, चिंतते सदातनः ॥
दादू सब जग विष भर्‌या, निर्विष बिरला कोइ ।
सोई निर्विष होइगा, जा के नाँव निरंजन होइ ॥
दादू निर्विष नाँव सौं, तन मन सहेजैं होइ ।
राम निरोगा करैगा, दूजा नाहीं कोइ ॥
ब्रह्म अगति जब ऊपजै, तब माया भगति बिलाइ ।
दादू निर्मल मल गया, ज्यूँ रबि तिमिर नसाइ ॥

२५९

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुर देवतः
बंदन सब साधवा, प्रणामं पारंगत ॥ १ ॥
साधू निर्मल मल नाहीं, राम रमै सम श्राइं ।
दादू अवगुण काढ़ि करि, जीव रसातल जाइ ॥ २ ॥
दादू जब ही साध सताइये, तब ही ऊँघ पलट ।
आकास धसै धरती खिसै, तीनों लोक गरक ॥ ३ ॥
दादू जिहिं घर निंद्या साध की, सो घर गये समूल ।
तिन की नीव न पाइये, नाँव न ठाँव न धूल ॥ ४ ॥
दादू निंद्या नाँव न लीजिये, सुपिनै हीं जिनि होइ ।
ना हम कहैं न तुम सुणौ, हम जिनि भाखै कोइ ॥ ५ ॥
दादू निंद्या कीये नरक है, कीट पड़ैं मुख माहिं ।
राम बिमुख जमैं मर, भग मुख आवै जाहिं ॥ ६ ॥
दादू निंदक बपुरा जिनि मरै, पर-उपगारी सोइ ।
हम कूँ करता ऊजला, आपण मैला होइ ॥ ७ ॥
दादू जिहिं बिधि आतम ऊधरै, परसै प्रीतम प्राण ।
साध सबद कूँ निदगा, समझैं चतुर सुजाण ॥ ८ ॥
अणदेख्या अनरथ कहैं, कलि प्रथमी का पाप ।
धरती अंबर जब लगैं, तब लग करै कलाप ॥ ९ ॥

अणदेख्या अनरथ कहैं, अपराधी संसार ।
जदि तदि लेला लेइगा, सकरथ सिरजनहार ॥१०॥
दादू डरिये लोक थैं, केसी धरैं उठाई ।
अणदेखी अजगैब की, पेसी कहैं बनाइ ॥ ११ ॥
दादू अमृत कूँबिष बिषकूँ अमृत, फेरि धरैं सब नाव ।
निर्मल मैला मैला निर्मल, जाहिंगे किस ठाँव ॥ १२ ॥
दादू साचे कूँ झूठा कहैं, झूठे कूँ साचा ।
राम दुहाई काढ़िये कंठ थैं बाचा ॥ १३ ॥
दादू झूठ न कहिये साचकूँ, साच न कहिये झूठ ।
दादू साहिब मानै नहीं, लागै पाप अखूट ॥ १४ ॥
दादा झूठ दिखावैं साच कूँ, भयानक भैश्रीत ।
साचा रात साच सौं, झूठ न आनै चीत ॥ १५ ॥
साचे कूँ झूठा कहै, झूठा साच समान ।
दादू अधिरज देखिया, यहु लोगौं का ज्ञान ॥ १६ ॥
दादू ज्यौंज्यौंनिंदैलोगबिचारा, त्यौंत्यौंछीजै रोग हमारा ।
साधन सब घटि रहै समाई, झूठा जगत झूठ ह्वैजाई ॥ १७ ॥

॥ समाप्त ॥